समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 अप्रैल 2019

वर्ष : 31, अंक : 19
प्रकाशन स्थल : शांतिकुंज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 मार्च 2019
वार्षिक चंदा : ₹ 60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-
ई-मेल : news.shantikunj@gmail.com

RNI-NO.38653/ 80 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2018-20

अश्वमेध गायत्री महायज्ञ, बीरगंज, नेपाल
ऋषिचेतना के प्रभाव से पूरे आर्यावर्त में होग देव संस्कृति का विस्तार 3

युवा अभ्युदय 2019
देश के भावी कर्णधारों को दिशा देने का एक प्रभावशाली मंच 7

मालवा क्षेत्र के आमला, जिला आगर में हुआ श्रीराम आरण्यक का लोकार्पण 8

अर्थतंत्र के चंगुल में फँसा जनतंत्र और हमारे दायित्व

आ गया चुनावी बसंत

बसंत में खिलती कोपलों, पतझड़ में गिरते पीले पत्तों और वर्षा में उग आने वाली हरीतिमा की तरह चुनाव के मौसम का भी अपना एक रंग होता है। दीवारों पर पोस्टर उभर आते हैं। झण्डों, चुनाव चिह्नों, भोंपुओं, सभाओं, जुलूसों और जनसम्पर्क की सरिता बरसाती नाले की तरह सीमा तोड़कर बहने लगती है। प्रचारकों, नेताओं और प्रत्याशियों के तूफानी दौरे आरम्भ हो जाते हैं। कोई रुपये बाँटता है तो कोई शराब के दौर चलवाता है। आखिर जनता की सेवा करने के उद्देश्य से चुनाव में खड़े होने वालों को यह विज्ञापन, यह प्रचार और पानी की तरह पैसा बहाने की आवश्यकता क्या है?

यह जनतंत्र है या अर्थतंत्र?

कहने को तो प्रजातन्त्र में सबको समान अधिकार है। सब चुनाव लड़ सकते हैं। 'जन' और 'तन्त्र' के बीच में एक बहुत बड़ी दीवार जो उठ खड़ी हुई है 'अर्थ' की और यह दीवार दिनोंदिन ऊँची होती जा रही है।

चुनाव के दंगल में समाज सेवा, जनसेवा और राष्ट्रसेवा की भावना रखने वालों की गुजर होना कठिनतर होता जा रहा है। ऐसे व्यक्तियों की अपेक्षा वे व्यक्ति सफल होते देखे जा रहे हैं, जो खर्च करने में समर्थ हैं और जो राजनीति में सेवा की भावना से नहीं, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की गरज से आये हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है कि राजनीतिज्ञों की कथनी-करनी में भी जमीन-आसमान का अन्तर आता जा रहा है। ऐसी स्थिति में राजनीति का स्तर का गिरते जाना तथा उसका निष्ठावान और ईमानदार लोकसेवियों का कर्मक्षेत्र नहीं, वरन सम्पति व साधनों की शक्ति वाले घटिया और स्वार्थी किस्म के लोगों का अखाड़ा बनता जाना स्वाभाविक ही है। यह स्थिति लोकतन्त्र के लिए बहुत घातक है।

आज चुनाव के मैदान में उतरने वाले अधिकांश प्रत्याशियों के दिल-दिमाग में जनसेवा, देशसेवा, सुशासन और दल के सिद्धान्त और शक्ति की बात तो गौण रहती है और मुख्य होती है अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा। उसी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए वह लाखों रुपये फूँकता है, चुनाव में अपने साधनों का प्रयोग करता है। लोकसेवा का उद्देश्य लेकर और जनता को सुशासन देने के दायित्व के निर्वाह की भावना से कौन इतना प्रचार कर सकता है? वहाँ तो मन-मस्तिष्क में पाँच वर्ष तक रोबदाब, स्वार्थशाही, ठाट-बाट, शान-शौकत, अच्छे खासे वेतन के साथ मुफ़्त में हजारों रुपये की आवास, प्रवास, संचार, चिकित्सा आदि की सुविधाएँ और फूलमाला तथा जय-जयकारों के सपने भी भरे होते हैं।

जब उन्हें साकार करने का नम्बर आता है तो पहले ये ही सब आते हैं, जनसेवा को तो सबसे अन्त में स्थान दिया जाता है। इनका प्रबल आकर्षण ही वर्गों, धर्मों, जातियों, सम्प्रदायों, दलबन्दियों, ट्रेड यूनियनों में बँटे हुए मतदाताओं को बहकाकर, उनकी निरक्षतरता और अन्धविश्वास से लाभ उठाकर, धन, भोज, शराब आदि के जाल फैलाकर येन-केन प्रकारेण कुर्सी हथियाने की जोड़-तोड़ बिठाने जैसे हेय हथकण्डे अपनाने का कारण है।

सच्चे समाजसेवियों की वेदना

भारत का आम आदमी गरीब है, उसकी आर्थिक स्थिति इस बात की इजाजत नहीं देती कि वह राजनीति के क्षेत्र में उतरे। कोई व्यक्ति सेवा भावना से, निष्ठा और ईमानदारी से इस क्षेत्र में आना चाहता है तो वह इन्हीं के बल पर चुनाव

जीत सके, ऐसा बहुत कम ही सम्भव है। ऐसे लोग प्रायः निराश ही रहते हैं। वे यही सोचकर दुःखी हुआ करते हैं कि गाँधी-सुभाष के सपनों का भारत कैसे बनेगा? इस स्थिति में वे राजनीति की इस दौड़ में सफल नहीं हो सकते, इसलिए उनकी जनसेवा और राष्ट्रसेवा की भावनाओं के अंकुर उगते ही मुरझाने लगते हैं, जबकि ऐसा होना नहीं चाहिए।

मोटी बुद्धि की विडंबना : चुनाव में खड़े होने वाले अधिकांश प्रत्याशियों के मन में जो स्वार्थ होता है, वैसा ही स्वार्थ आम मतदाता के मन में भी होता है, उन लोगों को छोड़कर कि जो लोकतंत्र के वृक्ष में लगते हुए इस स्वार्थ के कीड़े को विवेक की आँखों से देख रहे हैं।

वे लोग उदासीन, निराश और पस्त हैं। उनके मन-मस्तिष्क में जनता, देश और समाज की बात नहीं है। वे तो 'कोऊ नृप होय, हमें का हानि, चेरि छाँड़ि न करे कोउ पटरानी' की मंथरा बुद्धि से पीड़ित हो रहे हैं। कौन व्यक्ति आ जाय कि उससे मेरा लाभ हो या हमारे क्षेत्र का विकास हो जाय।

अच्छे पढ़े-लिखे और समझदार समझे जाने वाले व्यक्तियों के मुँह से भी ऐसी बातें सुनने को मिल जाती हैं-''भई अमुक मंत्री कितना ही भ्रष्ट और स्वार्थी रहा हो, उसने हमारे यहाँ तो सड़क बनवा दी।'' ''घर तो भर लिया पर अपने नगर को चमन करा दिया।'' आदि। वे बस इसी तरह की अपनी छोटी दृष्टि से ही तोलते हैं चुनाव में खड़े होने वाले प्रत्याशियों को।

अच्छे और सच्चे लोकसेवी समझें

जो लोग अपनी सेवाभावना, समाजनिष्ठा और राष्ट्रीयता की भावना के बल पर ही राजनीति में जमना चाहते थे, उन्हें पैसे, प्रभाव और छल-छद्म के बल पर चुनाव में सफल होने वाले घटिया स्तर के लोगों ने वहाँ जमने नहीं दिया तो उन्हें यह न समझ लेना चाहिए कि उनका अब कोई कर्मक्षेत्र ही नहीं रहा। गाँधी और सुभाष के सपनों का भारत बसता देखने वाले विवेकशील लोगों को भी उदासीन और निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

यह सोचना कि सब काम सरकार द्वारा होंगे और इसलिए लोकसेवकों को-जननायकों को, देशभक्तों और राष्ट्र के प्रति, लोकतंत्र के प्रति राजनीति की वही देहरी धोकनी पड़ेगी, जिसे पैसे और प्रभुत्व ने बदनाम कर रखा है, ही निराशा का कारण है। नहीं तो दुःख और वेदना तो हो सकती है, पर निराशा और उदासीनता नहीं उपज सकती आज की विकृत परिस्थितियों में भी।

लोकसेवियों के दायित्व

आजादी आ गयी, किन्तु अभी आजादी की लड़ाई समाप्त नहीं हुई है। तंत्र तो भारतवासियों के हाथ में आ गया, पर उस तंत्र को संभालने की समझ और शक्ति 'जन' में नहीं आयी है। अभी तो स्थिति यह है कि लगभग एक तिहाई व्यक्ति तो वोट देने जाना ही व्यर्थ समझते हैं। अशिक्षा और रूढ़िवादिता में जकड़ी जनता आजादी को अपने घर का उजाला कैसे बनाये, उसका उन्हें ज्ञान ही नहीं। ऐसे ही लोगों के वोट प्रचार द्वारा गुमराह करके या खरीदकर प्राप्त किये जा सकते हैं।

सवाल लोकतांत्रिक चेतना पैदा करने का है। इसके लिए राजनीति आज के समाजसेवी, लोकसेवी, राष्ट्रसेवी के लिए उपयुक्त क्षेत्र नहीं हैं। उसका क्षेत्र समाज सेवा का है। क्रान्ति के जो स्फुल्लिंग आजादी के पूर्व देखने को मिले थे, उन्हें दावाग्नी बनाने की आवश्यकता थी। राजनीतिक स्वतंत्रता चरम लक्ष्य नहीं था। वह तो सामयिक लक्ष्य था। क्रान्ति का एक मोर्चा था। अब दूसरे मोर्चे भी तो सम्हालने हैं। वे सब मोर्चे तो उपेक्षित पड़े रह गये हैं। राजनीतिक स्वाधीनता के बाद नैतिक, बौद्धिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक प्रगति की ओर जितना ध्यान दिया जाना चाहिए था, उतना नहीं दिया गया, जबकि यह बहुत आवश्यक था।

सोये जनतंत्र को जगाना होगा

हम राजनीति को ही सब कुछ मानकर चलते रहे, सरकार को ही सब जिम्मेदारियों की वाहक मानते रहे, यही सबसे बड़ी भूल हुई है, जबकि ये दोनों तो जनता के सेवक भर हैं। जनतंत्र की स्वामी जनता है, वह अभी तक गाफिल पड़ी सो रही है, क्योंकि उसे जगाया नहीं गया। आज सबसे बड़ी आवश्यकता जनजागरण की है।

जनता सोयी हुई है, उसे लोकतंत्र की महत्ता का पता नहीं है, इसलिए जैसा चल रहा है वैसा स्वीकारती जा रही है। जिन लोगों के दिल में इस बात का दर्द है कि राजनेताओं पर स्वार्थ हावी हो रहा है, वे उसी भीड़ में टक्करें मारने की बजाय जनजागरण के लिए कार्य करें। आज के राजनीतिक अखाड़ों और दलों के शुद्धिकरण का काम उन्हीं में रहकर किया जाय, यह सम्भव नहीं। उसके लिए तो उनके बाहर रहकर काम करना ठीक है।

यह बात नहीं कि जनता जनसेवियों का सम्मान नहीं करती या लोकतंत्र पर हावी होने वाले स्वार्थी तत्त्वों से त्रस्त नहीं है, पर उन्हें कोई मार्गदर्शन देने वाला ही नहीं मिलता और न ऐसे लोकसेवी ही नजर आते हैं जो उनके स्थान पर प्रतिष्ठित किये जा सकें।

ऐसे लोग हैं भी, तो वे असंगठित और बिखरे-बखरे हैं। उनका एक संगठन हो। उनका सेवा और निष्ठा से दीप्त प्रखर व्यक्तित्व ऐसा हो कि वे राजनीति में उतरे बिना भी समाज तंत्र को इतना सजग, चैतन्य और समर्थ बना दें कि राजनीति और राजतंत्र उनके इशारे पर चलें। जनता को जगाने, उसकी शैक्षणिक, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति को सुधारने का जन शिक्षण भी चलता रहे, तभी हमारे जन में तंत्र को संभालने की शक्ति, सामर्थ्य उत्पन्न हो सकेगी, फिर अर्थ उसके मध्य दीवार नहीं बन सकेगा।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य । वाङ्मय-64 'राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने?', पृष्ठ 3.56 से संकलित, संपादित

युगऋषि के यज्ञान्दोलन का मुख्य उद्देश्य रहा है जीवन को यज्ञमय बनाना

इस हेतु बड़े यज्ञों की अपेक्षा घर-घर यज्ञ, दीपयज्ञ अधिक प्रभावी हैं

हमारी यज्ञीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति को यज्ञीय संस्कृति भी कहा जाता है। ऋषियों ने अपने दिव्य अनुभव के आधार पर कहा है **''यज्ञः विश्वस्य भुवनस्य नाभिः''** अर्थात् इस संसार, इस ब्रह्माण्ड का नाभिक-केन्द्र यज्ञ है। इसीलिए सृष्टिकर्ता परमात्मा को भी 'यज्ञपुरुष' कहा गया है। इस तथ्य को समझ लेने पर ऋषियों ने पूरे जीवन को यज्ञीय अनुशासन में बनाये रखने के लिए तमाम अनुशासन बनाये। जन्म के पूर्व से शरीर छूटने के बाद तक के विभिन्न संस्कारों में यज्ञीय प्रक्रिया को प्रधानता दी जाती रही है। इसी कारण यह देश हजारों वर्ष तक सत्पुरुषों, देवमानवों की खदान, स्वर्ग से भी अधिक गरिमा वाला, श्री समृद्धि युक्त बना रहा, 'विश्वगुरु' चक्रवर्ती शासक जैसे गौरवमय सम्बोधनों का अधिकारी बना रहा।

यज्ञ शब्द 'यज्' धातु से बना है जिसके तीन अर्थ कहे गये हैं- देवपूजन, संगतिकरण और दान। यह तीनों प्रवृत्तियाँ मिलकर यज्ञ को समग्र रूप देती हैं।

देवपूजन, अर्थात् देव शक्तियों, सत्शक्तियों, सत्प्रवृत्तियों को सम्मानित, तुष्ट, पुष्ट करने वाले कर्म। यज्ञों से इस प्रयोजन की पूर्ति होती रहती थी, इसीलिए भी ज्ञानसम्पन्न, शक्तिसम्पन्न, साधनसम्पन्न सत्पुरुष यज्ञों के पोषण, विस्तार, संरक्षण के प्रयास करते रहते थे। आसुरी प्रवृत्ति के लोगों को देवशक्तियों, देवप्रवृत्तियों के समर्थ बनने से कठिनाई होती थी, इसीलिए वे यज्ञों में बाधा डालने, उनका ध्वंस करने के हर संभव प्रयास करते थे। व्यावहारिक जीवन में सभी लोकमंगलकारी श्रेष्ठकर्मों को यज्ञ कहा जाता रहा है। सूत्र है- 'यज्ञं वै श्रेष्ठतमः कर्म' अर्थात् श्रेष्ठ कर्मों को यज्ञ की संज्ञा दी जाती है।

संगतिकरण : सत्कार्यों, श्रेष्ठ कार्यों को गति देने के लिए सत्पुरुषों के तालमेल, सहयोग, सहकार की आवश्यकता पड़ती है। लोकहितैषी कार्यों में बहुतों के ज्ञान, श्रम, साधन एकत्र होकर एक दिशा में कुशलतापूर्वक लगाये जाते हैं, तभी वे ठीक प्रकार सम्पन्न हो पाते हैं। प्रत्यक्ष यज्ञ में भी ऐसे ही तालमेल की जरूरत होती है। देव पूजन और संगतिकरण के संयोग से ही लोकहितकारी शक्ति-साधनों की उपलब्धि होती है।

दान : समर्थ तन्त्र के सुनियोजित विकास से जो शक्ति-साधन हस्तगत होते हैं, उनका सदुपयोग दान के भाव से किया जाना चाहिए। दान का भाव यह है कि उपलब्ध शक्ति संसाधनों को अपने स्व के संकीर्ण घेरे में ही न रखा जाय, उन्हें अधिक लोकोपयोगी कार्यों में उदारतापूर्वक लगाया और गौरव के साथ दे दिया जाय। इसी आधार पर पूर्वकाल में अग्निहोत्र, यज्ञ, जपयज्ञ, ज्ञानयज्ञ आदि सम्पन्न होते रहे हैं। वर्तमान समय में भी भूदान यज्ञ, नेत्रदान, रक्तदान यज्ञ आदि सम्पन्न होते रहते हैं।

जब तक अपने देश, समाज में यज्ञीय प्रवृत्तियाँ जीवन्त रहीं, तब तक श्रेय, समृद्धि एवं गौरव के नये कीर्तिमान बनते रहे। कालान्तर में जब उनकी उपेक्षा होने लगी, तभी अधःपतन का सिलसिला चल पड़ा।

युगऋषि की पहल

युगऋषि परम पूज्य, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए इसीलिए यज्ञीय परम्परा को पुनर्जीवित करने का अभियान चलाया। उस पर लगे अनगढ़ प्रतिबन्धों को हटाया और कठिन प्रक्रिया को सुगम बनाया। युगऋषि की तपशक्ति, देवशक्तियों के अनुग्रह और युग साधकों के श्रम-मनोयोग-पुरुषार्थ के सुसंयोग से वह कठिन मोर्चा फ़तह हो गया। यज्ञ प्रक्रिया फिर से जन जीवन में प्रतिष्ठित हो गयी।

गुरुवर ने कहा, यह अभियान का एक चरण सफल हुआ। लोगों के मनों में भरे भय और भ्रान्तियों का निवारण किया जा सका तथा वे निःसंकोच भाव से, उत्साहपूर्वक यज्ञों में सम्मिलित होने लगे। यह एक अच्छी, सराहनीय उपलब्धि है, किन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं। अब हमें अगले चरण कुशलतापूर्वक बढ़ाकर उन्हें भी सफल बनाना है। यज्ञों का सुप्रभाव व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में प्रत्यक्ष दिखने लगे, ऐसे प्रयास करने हैं। यज्ञों से दो तरह के लाभ मिलने की बात कही जाती है। एक है उसका पदार्थ विज्ञान वाला पक्ष और दूसरा अन्तर्विज्ञान वाला पक्ष।

पदार्थ विज्ञान के अन्तर्गत जब अग्नि में विशेष प्रकार की समिधायें तथा विशेष प्रकार की सामग्री होमी जाती है तो यज्ञधूम के साथ उसके अति सूक्ष्म कण बहुत बड़े क्षेत्र में फैल जाते हैं। इसे यज्ञ की सूक्ष्मीकरण एवं बहुलीकरण प्रक्रिया कहते हैं। इसके साथ यज्ञीय मन्त्रों के उच्चारण का, याजकों की साधना, भावना का भी प्रभाव जुड़ता है तो उससे स्थूल पर्यावरण (इकॉलॉजी) के शोधन सन्तुलन का लाभ मिलता है। इससे वायुमण्डल में रोग निवारण, स्वास्थ्य पोषक तत्व बढ़ जाते हैं। प्रकृति में उर्वरता बढ़ती है जो प्राणवान वर्षा के माध्यम से फसलों एवं वृक्षों वनस्पतियों की मात्रा और गुणवत्ता बढ़ाती है।

नवीन शोधों से सिद्ध हो गया है कि यज्ञधूम में रोग निवारण करने, हानिकारक रेडियो विकिरण को, दूषित गैसों को निष्प्रभावी करने की क्षमता भी होती है।

अन्तर्विज्ञान के अनुसार साधकों को अपने जीवन में यज्ञ की सूक्ष्म प्रेरणाओं, शिक्षाओं को धारण करना पड़ता है। वे इस प्रकार हैं-

ऊर्ध्वगमन : यज्ञ की ज्वालायें हमेशा ऊपर की ओर उठती हैं। साधक को अपनी प्रवृत्तियाँ ऊर्ध्वगामी, उच्च आदर्शों की और बढ़ने वाली बनानी होती हैं।

ऊर्जावान : यज्ञाग्नि अपने आस-पास ताप और प्रकाश के रूप में ऊर्जा का संचार करती रहती है। साधक को भी अपने आस-पास के वातावरण में ज्ञान का प्रकाश और कर्मठता का ताप प्रसारित करने में सक्षम होना चाहिए।

भेद से परे : यज्ञ से उत्पन्न सूक्ष्म लाभकारी प्रवाह वर्गभेद, क्षेत्रभेद से ऊपर उठकर अपने प्रभाव क्षेत्र के चर-अचर सभी को लाभ पहुँचाता है। साधक को भी इसी प्रकार सर्वहित के लिए राग, द्वेष, लोभ, मोह से मुक्त रहकर सक्रिय रहना चाहिए।

अपने समान बनाना : यज्ञाग्नि में जो भी सामग्री विसर्जित की जाती है, उसे वह अपने समान बना लेता है। लकड़ी, काला कोयला, वनस्पतियाँ, काला तिल, सफेद चाबल, पीला जौ सभी अग्निरूप हो जाते हैं। याजक साधक के जीवन में भी अपने सम्पर्क क्षेत्र को यज्ञमय, परमार्थमय, ऊर्जामय बनाने की क्षमता होनी चाहिए।

शेष भस्म : यज्ञ को जो भी दिया जाता है, उस सबको वह परमार्थ में लगा देता है। अपने लिए कुछ नहीं बचाता। शेष भस्म भी बिखरकर धरती के पोषक तत्वों को बढ़ाती है। यह भस्म शरीर की नश्वरता का भी बोध कराती है। साधक 'इदं न मम' (यह मेरा नहीं) कहकर सामग्री अग्नि को सौंपता है तो यज्ञाग्नि भी 'इदं न मम' के भाव से उसे स्थूल सूक्ष्म वातावरण के शोधन, पोषण में लगा देती है। यज्ञाग्नि की ये पाँच प्रेरणाएँ धारण करने से जीवन यज्ञमय बन जाता है।

सोद्देश्य समीक्षा

युगऋषि ने अपने यज्ञाभियान में यज्ञ की दोनों प्रकार की विशेषताओं को उभारा। लेकिन उसकी समीक्षा करते निम्नानुसार बिन्दु स्पष्ट किए।

• हमारे यज्ञीय अभियान से यज्ञीय परम्परा को पुनर्जीवित करने का मार्ग खुल गया है। हर क्षेत्र के, हर वर्ग के व्यक्तियों को उससे जोड़ने का क्रम चल पड़ा है। यह चालू रखना उचित है, किन्तु उसके अगले स्तर विकसित करना जरूरी है।

• पदार्थ विज्ञानसम्मत यज्ञ करने के लिए अनगढ़ भीड़ को शामिल करना जरूरी नहीं। थोड़े से प्रामाणिक साधकों द्वारा प्रामाणिक समिधाओं एवं हवन सामग्री से निरन्तर आहुतियाँ देने का क्रम चलाया जा सकता था। नयी तकनीक का उपयोग करके नियन्त्रित तापमान वाली भट्टी में स्वचालित मशीनों से गुरुवर की आवाज में गायत्री मन्त्र के साथ निरन्तर आहुतियों का क्रम चलाना क्या कठिन था? पर्यावरण को उससे भी लाभ मिल जाता। इसके लिए जन-जन को प्रेरित प्रभावित करके उनका मूल्यवान समय लेकर इस प्रकार अभियान चलाने की क्या जरूरत थी?

• निश्चित रूप से ऋषि का मुख्य उद्देश्य जन-जन के जीवन में यज्ञीय अनुशासन प्रविष्ट कराना, जीवन को यज्ञमय बनाना रहा। इसीलिए जन-जन को प्रेरित-नियोजित करने का कठिन कार्य हाथ में लिया गया। हमें समयानुसार अपने क्रियाकलापों की समीक्षा करते हुए यज्ञाभियान को उनके मुख्य उद्देश्य के अनुरूप अधिक प्रभावशाली बनाने के विवेकपूर्ण जीवन्त प्रयास करते रहना चाहिए।

प्राथमिकता बदले

जन-जन को यज्ञों के प्रति आकर्षित करने के लिए बड़े भव्य, आकर्षक, खर्चीले यज्ञ करने की होड़ चल पड़ी है। पहले की स्थिति में यह उचित और आवश्यक भी था। बड़े भव्य समारोहों के प्रति आम जनता में एक सहज आकर्षण होता है। ऐसे समारोहों में जन समुदाय बिना उद्देश्य समझे सहज उत्साह से भी भाग लेने लगता है। समारोह करने वाले तन्त्र की समर्थता का बोध भी जन-जन को होता है। इसलिए वे बड़े समारोहयुक्त यज्ञ परिजनों को प्रेरित करके किये-कराये गये।

अब यज्ञ का महत्व जन साधारण और कभी यज्ञ विरोधी रहे लोगों की भी समझ में आ गया है। अपने संगठन, युग निर्माण परिवार, गायत्री परिवार की क्षमता, कुशलता का बोध भी अधिकांश क्षेत्र की जनता को हो गया है। नये क्षेत्रों में जरूरत के अनुसार वैसे भव्य, ख़र्चीले कार्यक्रम केन्द्र की सहमति से भले ही करा लिए जायें, किन्तु पुराने क्षेत्रों में प्राथमिकताएँ बदलनी जरूरी है।

युगऋषि ने दैहिक जीवन के अन्तिम चरण में इस सम्बन्ध में कुछ महात्त्वपूर्ण निर्देश दिये थे। हम उन्हें ध्यान में रखते हुए एक संकल्पित प्रयास पुरुषार्थ करें तो निश्चित रूप से परिणाम अधिक उपयोगी और अधिक टिकाऊ निकलेंगे। उनका सार संक्षेप इस प्रकार है-

• बड़े, अधिक कुण्डों, अधिक खर्चे वाले यज्ञों की होड़ रोक दी जाये। यदि इसे न रोका गया तो मूल उद्देश्य से भटक जायेंगे। ऐसे यज्ञ अनगढ़ समाज के लिए 'व्यसन' बन जायेंगे और चतुर चालाकों के लिए 'व्यवसाय' बन जायेंगे। ऐसे खतरे जगह-जगह अनुभव भी होने लगे हैं।

• कुण्डीय यज्ञ करने हो तो उन्हें सुव्यवस्थित, विकेन्द्रित रूप दिया जाय। उसमें निर्धारित साधना, तपश्चर्या करने वाले साधक ही भाग लें। साधकों के ही श्रद्धानुदान से साधन इकट्ठे हों। उनमें 'भव्यता' की अपेक्षा 'दिव्यता' के संचार को अधिक महत्त्व दिया जाय। इससे यज्ञ की वैज्ञानिकता को प्रधानता मिलेगी और उनके व्यसन या व्यवसाय बनने का ख़तरा टल जायेगा।

घर-घर यज्ञ, दीपयज्ञ

अभियान के मूल उद्देश्य, यज्ञ की वैज्ञानिकता बढ़ाने तथा जीवन को यज्ञमय बनाने के लिए शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनने के लिए घर-घर यज्ञ, दीपयज्ञों की परम्परा बहुत कारगर सिद्ध हो रही है।

• कुछ वर्ष पूर्व गुजरात के वरिष्ठ परिजनों ने गुरुपूर्णिमा पर एक साथ, एक समय पर एक जैसे संकल्प एवं कर्मकाण्ड के साथ हर मण्डल, हर शाखा, हर पीठ, हर संगठित इकाई को यज्ञ करने के लिए प्रेरित-प्रशिक्षित किया। उपलब्ध साधकों की संख्या के अनुसार एक से लेकर 24 कुण्डीय यज्ञ करने की छूट दी। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार एक ही दिन में प्रातः 9 बजे से 11 बजे के बीच पूरे प्रान्त में 7000 कुण्डीय यज्ञ हो गया। तैयारी में एक दो दिन का समय लगा और खर्चा नहीं के वरावर हुआ। यदि पूर्वाग्रह के अनुसार एक-एक हजार कुण्डीय 7 यज्ञ किये जाते तो पूरे वर्ष जी-तोड़ श्रम करना पड़ता और कई करोड़ का खर्चा हो जाता। कोई यह नहीं कह सकता कि इस प्रयोग से यज्ञ से होने वाले वैज्ञानिक प्रभाव में किसी प्रकार की कमी आयी।

• घर-घर यज्ञ की परम्परा देश के विभिन्न भागों की समर्थ पीठें, समर्थ शाखाएँ कराने लगी हैं। किसी छुट्टी के दिन एक साथ 11, 24, 51, 108 घरों में यज्ञ किये जाते हैं। सहज श्रम और सहज खर्चे में सीमित समय में इतने कुण्डीय यज्ञों का लाभ जन जीवन को मिल जाता है। परिणाम भी अधिक टिकाऊ निकलते हैं।

दीपयज्ञ : जन-जन के जीवन में यज्ञीय अनुशासन प्रविष्ट कराने के लिए प्रेरित-प्रशिक्षित करने के लिए दीपयज्ञों के रूप में युगऋषि ने एक अनोखी विधा, एक प्राणवान प्रक्रिया हमें सौंपी है। इसके सम्यक प्रयोग से याजकों को यज्ञीय जीवन की प्रेरणाएँ अधिक सहजता से दी जा सकती हैं।

• कुण्डीय यज्ञों की अपेक्षा इनमें स्थान, समय, साधन और श्रम कम लगता है। घरों-सार्वजनिक स्थलों पर बिना कोई विशेष बदलाव लाये इन्हें किया जा सकता है।

• कुण्डीय यज्ञों में अग्नि की संभाल, अग्नि से सुरक्षा आदि के लिए विशेष प्रयास करने पड़ते हैं, दीपयज्ञों में केवल दीपक और अगरबत्ती का प्रयोग होता है, इसलिए वह सहज है।

• दीपक में घृत तथा अगरबत्ती में हवन सामग्री की आहुति स्वचालित ढंग से होती रहती है, याजक निश्चिंत होकर पूरे मनोयोग से भावाहुतियाँ दे पाता है।

• कुण्डीय यज्ञ में पारियाँ बदलती रहती हैं। याजक प्रारम्भ से अंत तक की क्रियाओं में शामिल नहीं रह पाते। दीपयज्ञ में हर याजक के सामने थाली रूपी वेदिका रहती है। वह प्रारंभ से अंत तक की सभी क्रियाओं में शामिल रहता है और हर प्रेरणा को हृदयंगम कर पाता है।

अस्तु घर-घर यज्ञ एवं दीपयज्ञों को प्राथमिकता देकर हम यज्ञाभियान को अधिक सार्थक और व्यापक बनाकर युगऋषि के विशेष अनुगह के पात्र बन सकते हैं।

(क्रमशः)

शांतिकुंज की प्रसारण सेवाएँ
www.awgp.org
www.awgp.org/live
GayatriPariwaar या awgplive
awgpemaillist@gmail.com
@awgpskj.blogspot.com
YouTube
shantikunjvideo_Gayatri Pariwar

देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के अन्तर्गत 45वाँ अश्वमेध गायत्री महायज्ञ बीरगंज, नेपाल में सम्पन्न

ऋषिचेतना के प्रभाव से पूरे आर्यावर्त में होगा देव संस्कृति का विस्तार

• डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

नेपाल की उद्योग और ऐतिहासिक नगरी बीरगंज में 3 से 6 मार्च 2019 की तारीखों में अश्वमेध गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। बीरगंज के आदर्श नगर रंगशाला में 251 कुण्डीय महायज्ञ के साथ आयोजित हुआ यह गायत्री परिवार द्वारा चलाये जा रहे देव संस्कृति दिग्विजय अभियान का 45वाँ अश्वमेध महायज्ञ था। पूरा बीरगंज केशरिया रंग में रंगा हुआ था। काठमांडु से लेकर सभी 14 अंचल और 75 जिलों में आर्यावर्त की सनातन संस्कृति के पुनर्जीवन की उमंगों का संचार हुआ।

इस विराट आध्यात्मिक प्रयोग में ऋषियुग्म की प्राण चेतना के प्रमुख संवाहक श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी थे। अपनी तीन दिन की उपस्थिति में उन्होंने लाखों लोगों को अपनी आत्मीयता एवं आशीर्वचनों से अनुप्राणित किया। महाशिवरात्रि के पावन दिन उन्होंने हजारों श्रद्धालुओं को युगधर्म निभाने के संकल्प के साथ गायत्री महामंत्र की दीक्षा दिलायी।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी अश्वमेध महायज्ञ में देवपूजन के समय यज्ञाश्व प्रवेश कराते हुए

श्रद्धेय डॉ. साहब ने अपने संदेश में कहा कि देव संस्कृति पूरे आर्यावर्त में मानवता को पोषण देने वाली संस्कृति है। कभी अफगानिस्तान से लेकर बर्मा तक और कश्मीर से कन्याकुमारी तक का पूरा क्षेत्र आर्यावर्त कहा जाता था। यहाँ देवताओं का निवास हुआ करता था। लेकिन जैसे-जैसे देव संस्कृति का ह्रास होता गया, अपसंस्कृति ने पाँव पसारने शुरू कर दिये। हमारा खान-पान, रहन-सहन, चिंतन-मनन सब दूषित होते चले गये। परिणाम हम सबके सामने है।

श्रद्धेय डॉ. साहब ने कहा कि चाहे वह पर्यावरण संकट के रूप में हो या चाहे आतंक, अभाव, नशा, दुराचार, भ्रष्टाचार के रूप में हो, मानवीय अस्तित्व को चुनौती दे रहा यह संकट अपसंस्कृति की ही देन है। अश्वमेध महायज्ञ अपसंस्कृति को मिटाकर देव संस्कृति को प्रतिष्ठित करने के लिए किया जा रहा एक महान आध्यात्मिक प्रयोग है।

चार दिन चले अश्वमेध महायज्ञ में विचार मंथन का क्रम निरंतर चलता रहा। श्रद्धेय डॉ. साहब ने अश्वमेध के विविध अर्थों की व्याख्या करते हुए उसका एक अर्थ बुरे विचारों पर अच्छे विचारों की विजय भी बताया। उन्होंने कहा कि गायत्री और यज्ञ देव संस्कृति के माता-पिता है, वैसे ही परम पूज्य गुरुदेव के विचार इस युग में मानवता पथ प्रदर्शन करने वाली संजीवनी हैं। इनके सान्निध्य में एक नये समाज का, नये विश्व का निर्माण होकर रहेगा। उन्होंने नेपाल में व्याप्त नशा, मांसाहार, बलिप्रथा, नारी अत्याचार जैसी अनेक प्रथाओं के समापन के लिए व्यक्तिगत उपासना-अनुष्ठानों के साथ सामूहिक साधना पुरुषार्थ की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

मातृशक्ति के नवजागरण का उद्घोष है यह कलश यात्रा

• श्रद्धेया शैल जीजी

यज्ञस्थल पर पहुँचीं कलश यात्रा में भाग लेने वाली बहिनें

कलश यात्रा : 3 मार्च को 11000 कलशों सहित विराट कलश यात्रा निकली। नगर के चारों कोनों-गायत्री शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ, अशोक वाटिका दुर्गा मंदिर और धरैया पोखरा ये कलश यात्राएँ आरंभ हुईं, जो घंटाघर स्थित गहवा माई आकर एक हो गई। कलश यात्रा में अनेक रचनात्मक आन्दोलनों की झाँकियाँ आकर्षण का केन्द्र रहीं।

यज्ञ स्थल पर पहुँचने पर श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने कलश यात्रा में शामिल बहिनों का स्वागत किया। श्रद्धेया जीजी ने कलश धारण के सौभाग्य का वर्णन करते हुए कहा कि इन कलशों में दुर्गाशक्ति का वास है। भगवान विश्वकर्मा ने तेतीस कोटि देवताओं से एक-एक कला लेकर एक ही पात्र में स्थापित किया था, वह पात्र यह कलश है। यह कलश यात्रा मातृशक्ति के जागरण का और नेपाल राष्ट्र के नवजागरण का उद्घोष है।

योगी, ऋषि, तपस्वियों की भूमि है नेपाल

• डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

अश्वमेध के विराट मंच से उद्बोधन देते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने दीपयज्ञ एवं पूर्णाहुति के अवसर पर अश्वमेध महायज्ञ के प्रतिभागियों को संबोधित किया। उन्होंने नेपाल को योगियों, ऋषियों, तपस्वियों की भूमि बताते हुए भगवान पशुपतिनाथ, भगवान बुद्ध और राजा जनक, कपिल मुनि, याज्ञवल्क्य आदि को नमन किया। उन्होंने कहा कि यह अश्वमेध यज्ञ का यह महान प्रयोग इस देवभूमि की उन्हीं महान गौरवशाली परम्पराओं को याद दिलाने का का अवसर है।

हमारा लक्ष्य है असुरता को मिटाना

यज्ञ के प्रयोजन और गायत्री परिवार के लक्ष्य पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि हम पवित्र सोच वाले, उत्कृष्ट चिंतन वाले, श्रेष्ठ आचरण वाले व्यक्तियों की शृंखला फिर से समाज को दे सकें, ऐसे हमारे प्रयास हैं। समाज में व्याप्त असुरता को नष्ट कर मानव में देवत्व का संचार करना हमारा लक्ष्य है।

कुछ उल्लेखनीय बातें

अभूतपूर्व-अविस्मरणीय

यह अश्वमेध महायज्ञ नेपाल राष्ट्र का ऐतिहासिक, अविस्मरणीय आयोजन था। ऐसा विराट आध्यात्मिक अनुष्ठान नेपालवासियों ने शायद ही पहले कभी देखा हो।

नगरवासियों की आस्था

• नगरवासियों ने कलश यात्रा का भावभरे अंतःकरण से स्वागत किया। पूरा नगर झंडे, बैनर, लाइटिंग से सजाया गया था।

• कार्यक्रम की तिथियों (3 से 6 मार्च) में बिना किसी कानूनी दबाव के नगर में शराब और मांस की बिक्री नहीं हुई।

• दूर-दूर से आये श्रद्धालुओं को नगरवासियों ने अपने घर के स्नान घर-शौचालय जैसी सुविधाएँ स्वेच्छा से प्रदान कीं। जल, स्वल्पाहार भी उपलब्ध कराया।

सफलता के प्रमुख शिल्पी

इस महायज्ञ में गायत्री शक्तिपीठ रक्सौल के श्री ध्रुवनारायण श्रीवास्तव, डॉ. उपेन्द्र महतो, डॉ. राजू धर्माधिकारी, सावित्री काथिले, बृजेश कश्यप, जापान में रह रहीं सुनीता तिवारी, बीरगंज निवासी राजेश अग्रवाल, छोटेलाल, अरविंद पाठक, धर्मेन्द्र कुमार आदि का विशिष्ट योगदान मिला।

• कार्यक्रम में मंच संचालन देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थी रहे डॉ. राजू अधिकारी ने किया, जिन्होंने नेपाल में बाग्मती स्वच्छता से लेकर युग चेतना विस्तार के कई अभियानों को शानदार गति प्रदान की है।

नेपाल मंथन-बीरगंज में जनजागरण

• अश्वमेध महायज्ञ के निमित्त पूरे नेपाल के 14 अंचल, 75 जिलों का मंथन चार शक्तिकलशों के माध्यम से किया गया था।

• बीरगंज की 205 कार्यकर्त्ता बहिनों ने हर वॉर्ड में प्रतिदिन प्रातः प्रभात फेरी निकाली, दोपहर को घर-घर संपर्क किया और शाम को दीपयज्ञ कराये।

अश्वमेध महायज्ञ के प्रमुख कार्यक्रमों का विवरण सार-संक्षेप में

विचार मंच

चारों दिन विचार मंच से शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने युग संदेश दिया। डॉ. बृजमोहन गौड़ जी ने युग निर्माण आन्दोलन के सूत्र संचालक युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के व्यक्तित्व और कृतित्व की रोचक व्याख्या की। श्री श्याम बिहारी दुबे ने यज्ञ के ज्ञान-विज्ञान को कलात्मक ढंग से समझाया।

दीक्षा संस्कार

महाशिवरात्रि के दिन श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. साहब के श्रीमुख से हजारों लोगों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली। इस अवसर पर कई सांसद, सभासद, जनप्रतिनिधि, उद्योगपति एवं धर्मगुरु भी उपस्थित थे।

श्रद्धेय डॉ. साहब एवं श्रद्धेया जीजी प्रदर्शनी देखते हुए और भोजनालय में कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए

दीपयज्ञ

5 मार्च की सायं नेपाल के अर्थ मंत्री श्री ज्ञानेन्द्र बहादुर कार्की की विशिष्ट उपस्थिति में भव्य दीपयज्ञ आयोजित हुआ। बीरगंज के मेयर श्री विजय सरावगी के आह्वान पर इस अवसर पर घर-घर दीप जलाये गये। डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देसंविवि ने युग संदेश दिया।

बाल ब्रह्मज्ञानी गुरु आदित्य पधारे

पूर्णाहुति के दिन बाल ब्रह्मज्ञानी गुरु आदित्य जी, जिनके प्रति नेपालवासियों की विशिष्ट आस्था है, पधारे। उन्होंने उज्ज्वल भविष्य के लिए किए जा रहे गायत्री परिवार के प्रयासों को सराहा। प्रांत-2, नेपाल के मुख्यमंत्री श्री लालबहादुर राउत ने भी पूर्णाहुति यज्ञ में भाग लिया।

कलामंच

कलामंच अश्वमेध यज्ञ का विशेष आकर्षण था। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पूर्व विद्यार्थी बृजेश कश्यप एवं उनके साथी कलाकारों ने योग, संगीत, नाटक आदि का मंचन किया।

देव संस्कृति दिग्दर्शन

शांतिकुंज पीपीडी विभाग ने बीरगंज पहुँचकर जीवंत झाँकियों से युक्त भव्य प्रदर्शनी लगाई। इसमें परम पूज्य गुरुदेव के जीवन दर्शन, मिशन, सप्त आन्दोलन, भावी सतयुगी समाज की संकल्पना आदि को आकर्षक ढंग से दर्शाया गया था।

एवं युग साहित्य प्रदर्शनी

साहित्य प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसमें हिन्दी, अंग्रेजी तथा नेपाली साहित्य उपलब्ध था। लगभग 12 लाख रुपये का साहित्य लोगों ने खरीदा।

एक विशिष्ट संयोग

अश्वमेध यज्ञ समिति के संयोजक श्री विजय सरावगी थे, जो इन दिनों बीरगंज के महापौर भी हैं। उल्लेखनीय है कि अश्वमेध गायत्री महायज्ञ की तिथियों में तीन बार परिवर्तन हुआ। नेपाल में आये भूकम्प, चुनाव व मधेस आन्दोलन के कारण अश्वमेध यज्ञ की तिथियाँ तीन बार बदलनी पड़ी थीं। अंततः यह संयोग तभी बना जब मिशन के प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री विजय सरावगी वहाँ के मेयर बन गये। उनके मेयर बनने से यज्ञ के आयोजन में शासकीय सुविधायें प्राप्त करना सरल हो गया था।

यज्ञ-प्रव्रज्यादि से आदर्शवादी जीवन के प्रति बढ़ रहा है जन-उत्साह

बुंदेलखंड में युग निर्माणी उत्साह

निवाड़ी, टीकमगढ़। मध्य प्रदेश

निवाड़ी, जिला टीकमगढ़ में 16 से 19 फरवरी की तारीखों में 24 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न हुआ। तीसरे दिन दीपयज्ञ के अवसर पर शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधि श्रद्धेय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ा दी। उन्होंने अपने संदेश में दीपयज्ञ की मार्मिक प्रेरणाओं प्रकाश डाला।

श्रद्धेय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी ने अपने संदेश में व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण के बहुमूल्य सूत्र परम पूज्य गुरुदेव के मार्मिक जीवन प्रसंगों के साथ प्रस्तुत किये।

> जलता हुआ दीपक देव संस्कृति का, अध्यात्म का और सफल-सार्थक जीवन का प्रतीक है। मानव जीवन की गरिमा इसी में है कि हम अपने 'स्व' का दायरा बढ़ायें, सबको प्रेरणा-प्रकाश दें और समाज को सुखी बनायें।
> - श्रद्धेय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी

महाविद्यालय में उद्बोधन

बंगरा, जिला झाँसी के श्री राम महाविद्यालय में श्रद्धेय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी का उद्बोधन हुआ। विद्यार्थी और प्राध्यापक सभी उनसे प्राप्त आत्मविकास के सूत्रों से गद्गद थे। प्रश्नोत्तरी हुई और अपने जीवन को सुधारने-सँवारने का आश्वासन भी विद्यार्थियों ने दिया। इस कार्यक्रम में मऊरानीपुर के विधायक श्री बिहारीलाल आर्य, श्री सुरेशचंद्र बबेले एवं सुश्री भरती आर्य भी उपस्थित थे।

ओरछा में बन रहा है गायत्री चेतना केन्द्र

उ.प्र. एवं म.प्र. के 11 जिले मिलकर प्रभु श्री रामराजा सरकार के लिए सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक नगरी ओरछा में गायत्री चेतना केन्द्र का निर्माण कर रहे हैं। ओरछा में आयोजित 9 कुण्डीय गायत्री यज्ञ की पूर्णाहुति के दिन इससे संबंधित महत्त्वपूर्ण गोष्ठी हुई। इसमें ग्वालियर, जबलपुर एवं दमोह उपजोन प्रभारियों सहित सभी 11 जिलों के कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया।

गोष्ठी में शांतिकुंज प्रतिनिधि श्रद्धेय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी प्रमुख मार्गदर्शक थे। उन्होंने अपने मूल लक्ष्य की याद दिलाई और चेतना केन्द्र के निर्माण के साथ सभी 11 जिलों में गायत्री चेतना के विस्तार के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिये।

निवाड़ी में मंच पर वरिष्ठ क्षेत्रीय परिजनों सहित आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी और दीपयज्ञ की मनमोहक छटा

प्रथम विशाल महायज्ञ से उल्लसित हुआ समाज

संगठन-सक्रियता के बहुमूल्य सूत्र मिले

दतिया महायज्ञ में भागीदार परिजन एवं उन्हें संबोधित करते श्री कपिल केसरी जी

दतिया। मध्य प्रदेश

दतिया में 22 से 25 फरवरी की तारीखों में मनोरम कलश यात्रा सहित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। क्षेत्र में पहली बार बड़ा आयोजन देखकर श्रद्धालुओं का सैलाब-सा उमड़ पड़ा।

महायज्ञ का नेतृत्व शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री कपिल केसरी जी की टोली ने किया। दीक्षा संस्कार के समय उन्होंने गायत्री को कामधेनु के रूप में निरूपित करते हुए उन्होंने कहा कि यही वह अवलम्बन है जिसका सहारा लेकर जीवन को सुख-शांतिमय बनाया जा सकता है। कार्यकर्त्ता संगोष्ठी में उन्होंने संगठन संबंधी मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि सफल और प्रभावशाली संगठन बनाकर बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए छोटे-छोटे व्यक्तिगत स्वार्थ व यश की कामना को त्यागना ही होता है।

इस महायज्ञ में सांसद श्री भागीरथ प्रसाद, विधायक श्री नरोत्तम मिश्रा, विधायक सुश्री रक्षा सरौनिया, गायत्री परिवार के हरीश तिवारी सहित शहर के कई गणमान्यों ने प्रतिभागिता की।

अश्वमेध यज्ञ के लिए बढ़ता उत्साह, गोसंवर्धन की प्रेरणा दी

वाडा, पालघर। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार वाडा द्वारा 16 से 19 फरवरी की तारीखों में 108 कुण्डीय गोसंवर्धन गायत्री महायज्ञ मनोरम शोभायात्रा के साथ सम्पन्न हुआ। इसका संचालन शांतिकुंज से पहुँची डॉ. अशोक ढोके, श्री परमेश्वर साहू व श्री अरुण खण्डागले की टोली ने किया।

यह कार्यक्रम मुम्बई में आयोजित होने वाले अश्वमेध की तैयारियों की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी था। आत्मपरिष्कार के सूत्रों के साथ राष्ट्र के नवनिर्माण में गौसंवर्धन के महत्त्व पर विशेष रूप से चर्चा हुई। इस्कॉन के प्रमुख श्री दामोदर दुलालदास प्रभु एवं प्रसिद्ध सन्त श्री बालकनाथ जी ने गो-संरक्षण एवं भारतीय संस्कृति पर विचार व्यक्त किये।

डॉ. देवेन्द्र दुसान को वैद्यक एवं श्री योगेश गन्धे को शैक्षणिक क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए युगनिर्माण पुरस्कार प्रदान किये गये।

गायत्री शक्तिपीठ नालासोपारा के प्राणवान परिजन श्री सुरेद्रनाथ दुबे जी ने पूरे महायज्ञ में आधी कीमत पर मराठी साहित्य का ब्रह्मभोज उपलब्ध कराया। नगर प्रमुख श्रीमती गीतांजलि कोलेकर, श्री प्रकाश कोइनकर, श्री नेगी जी व मनोज जी सहित हजारों श्रद्धालुओं ने महायज्ञ में सुख-शांति की प्रार्थना की।

24 गाँवों की प्रव्रज्या, 250 लोगों ने दीक्षा ली

थांदला, झाबुआ। मध्य प्रदेश

युवा शक्ति को जागृत करने का विशेष लक्ष्य रखते हुए दशहरा मैदान थांदला में 51 कुण्डीय शक्ति संवर्धन गायत्री महायज्ञ 9 से 12 फरवरी को सम्पन्न हुआ। महायज्ञ का संचालन शांतिकुंज के श्री केदार प्रसाद शर्मा की टोली ने किया। इस यज्ञ के प्रयाज में थांदला नगर के 108 घरों में गायत्री यज्ञ किये गये।

कार्यक्रम संयोजक श्री अन्तर सिंह रावत, परिव्राजक श्री कमलेश वाश्कले तथा शिक्षक श्री महेश कुमार बिरला की टीम ने 24 ग्रामों की प्रवज्या की। प्रयाज में नगर के महिला मण्डल का अग्रणी योगदान रहा।

प्रथम दिवस 1008 शक्ति कलशों के संग निकली विशाल शोभायात्रा ने नगर को गायत्रीमय कर दिया। पावन वसंत पर्व के दिन 251 भाई-बहिनों ने गुरुदीक्षा ली। देवपूजन के दिन क्षेत्रीय विधायक श्री वीर सिंह भुरिया भी उपस्थित थे।

यज्ञ में एक विशेष उपलब्धि के रूप में गायत्री पब्लिक स्कूल के अध्यक्ष श्री लखन दास बैरागी के मार्गदर्शन में 150 छात्र-छात्राओं का विद्यारम्भ संस्कार हुआ। केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने क्षेत्र के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डॉ. शिवनारायण सक्सेना, प्रबन्धक गायत्री शक्तिपीठ जोबट, जिला समन्वयक श्री संतोष वर्मा तथा पद्मश्री महेश शर्मा का सम्मान किया।

थांदला

जन्मभूमि के उत्कर्ष के लिए शांतिकुंज प्रतिनिधियों की प्रभावशाली प्रस्तुति

बासवा में प्रज्ञापुराण कथा कहते शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री नरेन्द्र ठाकुर

बासवा, खरगोन। मध्य प्रदेश

खरगोन जिले के ग्राम बासवा में 28 जनवरी से 1 फरवरी को पाँच दिवसीय प्रज्ञा पुराण कथा एवं 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ। शुभारम्भ पर महिला मण्डल और प्रज्ञा मण्डल के भाई-बहनों ने मनोरम झाँकियों से सजी शोभायात्रा निकालकर जन जागरण किया। इसमें करीब पाँच हजार श्रद्धालुओं ने यज्ञाहुतियों के साथ पावनकारी कथा का श्रवण किया।

शांतिकुंज हरिद्वार के श्री नरेन्द्र ठाकुर, श्री मायाचन्द भारद्वाज आदि भाइयों की टोली ने आयोजन का नेतृत्व किया। श्री ठाकुर ने इसमें धर्म के प्रति आस्था, ईश्वर विश्वास, यज्ञ, सत्संग, गायत्री महाविद्या, साधना-आराधना जैसे आत्मकल्याणकारी विषयों को शास्त्रीय सन्दर्भों और कथा-कहानियों के माध्यम से सुगम भाषा में श्रद्धालुओं को समझाया। साथ ही समाज में व्याप्त कुरीतियों, मूढ़मान्यताओं, अन्धविश्वासों और संकीर्णताओं की जंजीरों को तोड़कर पूज्य गुरुदेव के बताये अभिनव समाज निर्माण के सूत्रों को जीवन में उतारने और नये सुखद भविष्य की ओर आगे बढ़ने हेतु प्रेरित किया।

उल्लेखनीय है कि अधिकांश टोली प्रतिनिधि स्थानीय मूल के ही थे, जिन्होंने अपने लोकभाषा में क्षेत्रीय अवांछनीयताओं को निस्तर करने के लिए पूरे मनोयोग से प्रयास किये थे।

महेन्द्र सिंह पँवार के अनुसार आयोजन में 80 गुरु दीक्षा सहित अन्य संस्कार भी हुए। दीपयज्ञ भी प्रभावशाली रहा। आयोजन समिति के श्री पन्नालाल बिर्ला, रविन्द्र दुबे, जगदीश शाह, चेतराम मुछाला, अनोखीलाल पटेल, उम्मेद सिंह सोलंकी सहित सभी ग्रामवासियों ने व्यवस्था बनाने में सहयोग किया।

आवरी, धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री चेतना केन्द्र आवरी द्वारा ग्राम लिलेझर में 8 से 10 फरवरी तक पाँच कुंडीय यज्ञ एवं प्रज्ञापुराण कथा का आयोजन किया गया। श्री दयाराम पुरोहित आवरी की टोली ने छोटी-छोटी कथा-कहानियों के माध्यम से नारी जागरण, नशा निवारण, सदाचारमय जीवन के लिए लोगों को प्रेरित किया। समाज में फैली कुरीतियों के निवारण हेतु बुद्धिशील वर्ग को आगे आने और युगनिर्माण के आन्दोलनों को गति देकर स्वस्थ व समुन्नत समाज निर्माण के महान कार्य में भागीदार बनने हेतु आह्वान किया। वसन्त पर्व के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने पूज्य गुरुसत्ता के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित की तथा वरिष्ठ परिजनों से उनके जीवन से जुड़े मार्मिक संस्मरण सुनकर वे भावविभोर हो उठे।

बिलाईगढ़, रायगढ़। छत्तीसगढ़

बिलाईगढ़ में आयोजित तीन दिवसीय नौ कुण्डीय यज्ञ में सरिया, बरमकेला, साल्हेओना, पुसौर, सारंगगढ़ आदि शहरों से 3000 से अधिक श्रद्धालु शामिल हुए। इस का संचालन श्री घनश्याम साहू की टोली ने किया। श्री रामचरण सिदार के नेतृत्व में 'पेड़ लगाओ-पर्यावरण बचाओ' तथा 'बेटी पढ़ाओ-संस्कारी पीढ़ी बनाओ' पर नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई।

51 घरों में यज्ञ कर मनाया वार्षिकोत्सव

बीजापुर। छत्तीसगढ़ : गायत्री शक्तिपीठ बीजापुर का चतुर्थ प्राण प्रतिष्ठा वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। 26 से 28 फरवरी तक हुए इस उत्सव के पहला दिन 12 घण्टे का अखण्ड जप, दूसरे दिन शहर के 51 घरों में एक साथ एक समय में गायत्री यज्ञ, सायंकाल विशाल शोभा यात्रा व दीप यज्ञ तथा तीसरे दिन 5 कुण्डीय यज्ञ एवं विविध संस्कार सम्पन्न हुए। इस कार्यक्रम में गायत्री शक्तिपीठ दन्तेवाड़ा, प्रज्ञापीठ भैरमगढ़, नेलसनार, आवापल्ली, मद्देड़, भोपालपटनम, गंगालूर, दारापाल एवं फुलगट्टा के परिजनों ने सहयोग किया।

पूर्णाहुति यज्ञ से पूर्व निकली कलश यात्रा

मुम्बई में मैराथन दौड़ में अश्वमेध यज्ञ का प्रचार

धावक और दर्शकों को सत्प्रवृत्ति संवर्धन अभियान में भागीदारी के लिए आमंत्रित किया

मुम्बई। महाराष्ट्र

वसन्त पंचमी के शुभ अवसर पर मुम्बई के सुप्रसिद्ध बिल्डर हीरानन्दानी ग्रुप की ओर से मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 13000 लोगों ने भाग लिया। गायत्री परिवार मुम्बई ने इस आयोजन में चैरिटी पार्टनर की भूमिका निभाई, 200 कार्यकर्त्ताओं ने तरह-तरह से सेवाएँ प्रदान कीं। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फडणवीस की धर्मपत्नी श्रीमती अमृता फडणवीस ने इसके लिए गायत्री परिवार मुम्बई के श्री मनुभाई पटेल को सम्मानित भी किया।

इस कार्यक्रम में परिजनों ने 20 से 26 जनवरी 2021 को मुम्बई में होने जा रहे अश्वमेध महायज्ञ की जानकारी को यज्ञध्वज, साहित्य स्टॉल आदि के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया।

मुम्बई मैराथन में सेवाएँ प्रदान करते गायत्री परिवार के स्वयंसेवक

1 लाख पौधे लगायेंगे, 5 वर्ष तक सँभालेंगे

गायत्री परिवार ने अश्वमेध यज्ञ के प्रयाज कार्यक्रम के रूप में मुम्बई के निकटवर्ती क्षेत्र में महाराष्ट्र सरकार द्वारा निर्धारित जमीन पर 1 लाख पौधे लगाकर उनका 5 वर्ष तक ध्यान रखने की योजना बनाई है, जिसके प्रतिभागी बनने हेतु मैराथन में आये युवाओं को प्रोत्साहित किया गया। इसमें सहभागिता हेतु नाम दर्ज कराने वालों को भेंट स्वरूप युग साहित्य दिया गया।

शिवरात्रि पर्व पर पर्यावरण संरक्षण के लिए हुआ विशिष्ट प्रयोग

सतपुड़ा की पहाड़ियों को हराभरा करने के लिए योजना बनाई

बुरहानपुर। मध्य प्रदेश

निमाड़ क्षेत्र में शिवरात्रि पर्व पर बड़ी संख्या में मिट्टी के पार्थिव शिवलिंग बनाने, उनका अभिषेक करने और पवित्र जलस्रोतों में विसर्जित करने की परम्परा है। पर्यावरण सुरक्षा के लिए क्रांतिकारी आन्दोलन चला रहे बुरहानपुर के श्री मनोज तिवारी ने इस जनआस्था का प्रगतिशील प्रयोग करते हुए बंजर पड़ी सतपुड़ा की पहाड़ियों को हराभरा करने की योजना बनाई है।

- 51000 पार्थिव शिवलिंग बनाए
- उनमें बेल के बीज रखे
- पूजा के बाद सतपुड़ा की वीरान पहाड़ियों पर रोपे गये

नगर के लालबाग स्थित सप्तश्रृंगी माता मंदिर में इस वर्ष महाशिवरात्रि पर्व पर काली मिट्टी के 51000 पार्थिव शिवलिंग बनाये गये। इन सभी के बीच बेल के पेड़ के दो-दो बीज रखे गये। इनके निर्माण में महिला मण्डल ने अथक परिश्रम किया था। शिवरात्रि पर परम्परागत रूप से इन पार्थिव शिवलिंगों का पूजन-अभिषेक किया गया।

बुरहानपुर के युवा संगठन की प्रेरणा से इन पार्थिव शिवलिंगों का जलाशय में विसर्जन न कर प्रतीकात्मक विसर्जन कर एक ऐसी योजना के लिए समर्पित किया गया, जिसके द्वारा सतपुड़ा की वीरान पहाड़ियों को हराभरा बनाया जा सके।

एक-एक शिवलिंग को एक-एक प्लास्टिक की थैली में रखा गया, विसर्जन किया गया और इसके साथ ही आरंभ हो गयी शिवलिंग में रखे गये बेल के बीजों के अंकुरण की प्रक्रिया। इन्हें थैलियों में ही पौध के रूप में विकसित किया जायेगा, फिर सतपुड़ा की पहाड़ियों पर रोपा जायेगा। वहाँ खाद-पानी की व्यवस्था पहले ही कर ली गई है। जैसे-जैसे वे विकसित होते जायेंगे, वीरान पहाड़ियाँ हरी-भरी होती जायेंगी।

शिवरात्रि पूजन और वृक्षारोपण के इस विवेक सम्मत अभियान में नगरवासी भी भरपूर रुचि ले रहे हैं।

गमलों में शिवलिंगों का विसर्जन कर रोपे तुलसी के पौधे

बून्दी। राजस्थान : बून्दी गायत्री परिवार ने भी महाशिवरात्रि का पर्व मिट्टी के 24 शिवलिंग बनाकर विधानानुसार दुग्ध-जलादि से उनका महाभिषेक किया और पूजन के उपरान्त गमलों में तुलसी के पौधे लगाकर उन्हीं में उनका विसर्जन किया। इसमें शिवजी की पूजा कर जनकल्याण की कामना की तो पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान दिया। शिव-भक्ति का यह बहुत ही प्रेरक स्वरूप है जिसे श्री सुरेश विजयवर्गीय सहित बून्दी परिजनों ने प्रस्तुत किया।

जतारा। मध्य प्रदेश

नशामुक्ति की प्रेरणा व संकल्प

महाशिवरात्रि पर स्थानीय युवाओं ने नशामुक्ति अभियान चलाया। उन्होंने राहगीरों, हमालों व किसानों को नशे की हानियाँ बताकर उन्हें नशा छोड़ने की प्रेरणा दी इससे प्रभावित होकर हरपुरा निवासी किसान कमलसिंह घोष, नामनगर खुर्द के पारीक्षत राजपूत, बाजीतपुरा के लक्ष्मी राजपूत, मोहन साहू, शैलेन्द्र घोष, अंकित सिंह, राकेश आदि कई लोग नशा छोड़ने के संकल्प लिये।

वसंत पर्व पर 55 वरिष्ठ जनों को दिया 'यज्ञवीर' सम्मान

सैंधवा में 'यज्ञवीर' सम्मान ग्रहण करते वरिष्ठ परिजन

सेंधवा। मध्य प्रदेश

गायत्री धाम सेंधवा ने अपनी आराध्य गुरुसत्ता का आत्मबोध दिवस 'वसन्त पर्व' बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर अखण्ड जप एवं पंचकुण्डीय यज्ञ के साथ प्रतिभा प्रोत्साहन का विशेष क्रम भी सम्पन्न हुआ। इसके अंतर्गत गायत्री शक्तिपीठ, सैंधवा की स्थापना तथा संचालन में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले 55 वरिष्ठ गायत्री परिजनों को 'यज्ञवीर' सम्मान से विभूषित किया गया। यह सम्मान सन् 1954 से लेकर1988 के बीच मिशन में सक्रिय हुए कार्यकर्त्ताओं में से हैं जिन्हें सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. जीपी सक्सेना, डॉ. एल.एन. वडनेरे, गायत्री धाम की मीरा बहिन, इन्दौर से श्री रमेश सिंह राजपूत व अध्यक्ष महेश सोनी सहित सेंधवा के सभी कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे।

गुरुसत्ता को साधना-सद्भावों की श्रद्धांजलि

सवाई माधोपुर। राजस्थान

गायत्री परिवार सवाई माधोपुर ने अपनी मार्गदर्शक गुरुसत्ता के बोध दिवस पर उनके श्रीचरणों में सवा लाख गायत्री मन्त्र का सामूहिक जप, पंचकुण्डीय यज्ञ एवं दीपयज्ञ का अर्घ्य अर्पित किया। 8 से 10 फरवरी तक हुए श्रद्धा-समर्पण प्रधान महोत्सव में बड़ी संख्या में सभी वर्ग के नागरिक, समाजसेवियों ने भाग लिया और जप-यज्ञाहुतियों के साथ गुरु-गायत्री से 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' की प्रार्थना की।

- 120 परिजनों ने **प्रज्ञा अभियान** की सदस्यता ली

वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री हरिमोहन शर्मा एवं डॉ. पी.एल. बंसल ने प्रतिभागियों को देव दक्षिणा के रूप में व्यसनमुक्त, आदर्शोन्मुख जीवन जीने तथा समाज निर्माण के गुरुतर कार्य में यथाशक्ति योगदान देने की प्रेरणा दी और शुभ संकल्प दिलाये। इस तीन दिवसीय उत्सव में 120 श्रद्धालुओं ने 'पाक्षिक प्रज्ञा अभियान' की सदस्यता ली।

पटियाला। पंजाब

गायत्री परिवार पटियाला के तत्त्वावधान में बाबाजी का डेरा, न्यू लाल बाग कॉलोनी में तीन कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ वसन्त का उत्सव मनाया गया। इसमें डेरा के सदस्यों एवं गायत्री परिवार की श्रीमती मीना गुप्ता, नेहा गुप्ता आदि परिजनों सहित कई धर्म-सम्प्रदाय के सदस्यों ने सपरिवार भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन परिवीक्षा पर गई देवसंस्कृति विश्वविद्यालय की छात्रा गरिमा शर्मा, अर्पिता धीमान व उन्नति डबराल ने किया। छात्राओं ने इसमें वसन्त की प्रेरणा, पूज्य गुरुदेव के जीवन में वसन्त का महत्त्व, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के सृजनात्मक क्रियाकलाप तथा मिशन के विभिन्न अभियानों की जानकारी देते हुए उनमें सहभागिता हेतु सबको प्रोत्साहित किया। समापन पर छात्राओं को भावभरी विदाई दी गई।

32वाँ वार्षिकोत्सव

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के मेधावी छात्रों का सम्मान भी

गाडरवारा। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार गाडरवारा ने गायत्री शक्तिपीठ की 32वीं वर्षगाँठ सवा लाख गायत्री जप अनुष्ठान के साथ मनाई। गायत्री परिवार के जनक पूज्य गुरुदेव जी का आध्यात्मिक जन्म दिवस वसन्त पर्व से प्रारम्भ करके नर्मदा जयन्ती, यानि 10 से 12 फरवरी तक सवा लाख जप पूरा कर गुरुचरणों में पूर्णाहुति के पुष्प अर्पित किये। इसमें सैकड़ों परिजनों ने भाग लिया।

इसी बीच वसन्त पंचमी पर भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में सम्मिलित 27 शालाओं के शिक्षकों तथा उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को प्रमाण पत्र के साथ साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही दहेज उन्मूलन अभियान के प्रति जन जाग्रति फैलाने में सक्रिय भूमिका निभा रहे शिक्षक अवधेश ममार करेली सहित अन्य अग्रणियों का भी सम्मान किया गया। समापन दीपयज्ञ के साथ किया गया।

गाडरवाड़ा में भासंज्ञाप में सहयोगी रहे शिक्षक प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते हुए

नशामुक्ति रैली

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार देवास ने ग्राम नेवरी में श्री रमेशचन्द मोदी व चन्द्रिका शर्मा के नेतृत्व में गायत्री परिजनों ने नशामुक्ति रैली और फिल्म प्रदर्शन कर गाँववासियों को नशे के खतरों से सावधान कराया तथा त्यागने का आग्रह किया। दीपयज्ञ हुआ, जिसमें जन्मदिन मनाने वाले तीन बच्चों समेत उपस्थित लोगों को नशा से दूर रहने की प्रेरणा दी। वर्ष 2018 में चलाये गये नशामुक्ति अभियान की समीक्षा भी की गई।

भावभरी श्रद्धांजलि

खगड़िया। बिहार

गायत्री परिवार के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री गोपालकृष्ण प्रसाद जी का 28 फरवरी 2019 को स्वर्गवास हो गया। श्री गोपाल जी भारतीय जीवन वीमा निगम के विकास पदाधिकारी थे। सन् 1969 को मथुरा में पूज्य गुरुदेव से मिले। तब से बिहार-झारखण्ड सहित कई प्रान्तों में पूज्य गुरुदेव के विचारों को फैलाने के नैष्ठिक प्रयास करते रहे।

बाल संस्कार शाला के बच्चों ने किया संत रैदास की शिक्षाओं का मनमोहक मंचन

लखीमपुर-खीरी। उत्तर प्रदेश

19 फरवरी को श्रीरामनगर कॉलोनी (बड़खेरवा) मोहल्ले में गायत्री परिवार द्वारा संत रैदास जयंती मनाई गई। गायत्री परिजन उदय सिंह ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि संत, शहीद और सुधारक किसी जाति, धर्म या संप्रदाय के नहीं होते। उनसे सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण युवा प्रकोष्ठ द्वारा संचालित युग सृजन बाल संस्कारशाला के बच्चों द्वारा प्रस्तुत 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' का नाट्य मंचन था। बच्चों ने इसमें संत रैदास के कर्तव्यनिष्ठ जीवन का चित्रण किया।

नवसृजन अभियान को गति देने हेतु देश भर में सम्मेलनों के आयोजन

युग सृजेता सम्मेलन, हर्रई

हर्रई, छिन्दवाड़ा। मध्य प्रदेश

दिनांक 27 एवं 28 जनवरी 2019 को हर्रई जिला छिंदवाड़ा में युग स्रजेता सम्मेलन आयोजित हुआ। युवा प्रकोष्ठ प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री के.पी. दुबे और श्री योगेन्द्र गिरि इस सम्मेलन में प्रमुख मार्गदर्शक के रूप में उपस्थित रहे।

श्री के.पी. दुबे ने 'युवा जागरण से राष्ट्र जागरण' विषय से अपना संदेश दिया। उन्होंने कहा कि हमारा राष्ट्र केवल भूगोल नहीं है। हमारे ऋषि, संस्कृति, महाराणा प्रताप, झाँसी की रानी, लाखों स्वतंत्रता सेनानियों जैसी समृद्ध विरासत को मिलाकर हमारा राष्ट्र बनता है। सबके संकल्पों और सपनों का साकार करने में ही हमारे जीवन की सार्थकता है, राष्ट्र का सच्चा विकास निहित है। उन्होंने कहा कि माँ भारती लम्बे समय से उन समझदार, ईमानदार, जिम्मेदार और बहादुर युवाओं की तलाश कर रही है जो इस राष्ट्र को उसकी वास्तविक पहचान दिला सकें। हमें इसके लिए अपनी क्षमताओं का बोध करना होगा, प्रतिभा को विकसित करना होगा और सेवा भाव के साथ उसे नियोजित करना होगा।

> माँ भारती लम्बे समय से उन समझदार, ईमानदार, जिम्मेदार और बहादुर युवाओं की तलाश कर रही है जो इस राष्ट्र को उसकी वास्तविक पहचान दिला सके।
> • श्री केदार प्रसाद दुबे

श्री योगेन्द्र गिरि ने युवाओं को सेवाभाव के साथ स्वावलम्बी बनने के सूत्र दिये। उन्होंने कहा कि लोकसेवियों को स्वावलम्बी और स्वाभिमानी होना चाहिए। प्रामाणिक और चरित्रवान लोकसेवी ही समाज पर अपना प्रभाव छोड़ पाते हैं।

युग सृजेता सम्मेलन हर्रई में युवाओं को नशामुक्ति के लिए भी प्रभावशाली प्रेरणा दी गई। प्रथम दिन 'नशा भारत छोड़ो' उद्घोष के साथ जनजागरण यात्रा निकाली गई। कई युवाओं ने मंच पर आकर नशा त्यागने के संकल्प लिये।

सायंकाल मातृशक्ति श्रद्धांजलि दीपयज्ञ के साथ इसका समापन हुआ। वरिष्ठ संगठन प्रभारी श्री रमेश गायकवाड़, श्री दिनेश देशमुख, श्री अटल खुवेजी के साथ हर्रई एवं जिला के विभिन्न विकासखंडों से पधारे 600 ग्रामीण युवाओं ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री के .पी. दुबे युग सृजेता सम्मेलन, हर्रई को संबोधित करते हुए

27 जिलों के 500 युवाओं ने छत्तीसगढ़ को आदर्श प्रान्त बनाने के संकल्प लिये

रायपुर। छत्तीसगढ़

प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ छत्तीसगढ़ के 10 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में गायत्री शक्तिपीठ, समता कॉलोनी, रायपुर में 3 मार्च को 'सृजन सेनानी अग्रदूत सम्मान समारोह' का आयोजन किया गया। मौसम खराब रहने के बाद भी इसमें 27 जिलों के 500 युवा अग्रदूतों-युग सेनानियों ने भाग लिया। इसमें समाज निर्माण के क्षेत्र में योगदान देने वाले युगसैनिकों को सम्मानित किया गया।

सृजन सेनानी अग्रदूत सम्मान

समारोह का नेतृत्व शांतिकुंज प्रतिनधि श्री गंगाधर चौधरी जी ने किया। उन्होंने साधना, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलम्बन आदि आन्दोलनों की समाज निर्माण में उपयोगिता पर चर्चा करते हुए कहा, पूज्य गुरुदेव द्वारा निर्देशित यही वह आधार हैं जिनका अवलम्बन लेकर व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र को समर्थ, सशक्त बनाया जा सकता है। श्री चौधरी जी ने इन आधारों को क्रियान्वित कर 'अखण्ड दीपक' एवं परम वन्दनीया माताजी के जन्म शताब्दी वर्ष 2026 तक छत्तीसगढ़ प्रान्त को समर्थ, सशक्त बनाकर एक नये आदर्श प्रान्त के रूप में विकसित करने हेतु युवाओं का आह्वान किया। प्रान्तीय संयोजक श्री ओम प्रकाश राठौर ने भी छत्तीसगढ़ को युगनिर्माण प्रदेश बनाने के लिए जमीनी तौर पर कार्य करने की बात कही।

रायपुर के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डॉ. अरुण मढ़रिया जी ने प्रकोष्ठ द्वारा संचालित 'स्वालोकम्' के प्रचार-प्रसार के लिए एक गाड़ी 407 दान में दी। उल्लेखनीय है कि 'स्वालोकम्' स्वास्थ्य एवं स्वावलम्बन का ऐसा समन्वय केन्द्र है जो स्वदेशी स्वास्थ्यकारी आयुर्वेदिक उत्पादों के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है।

प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ छत्तीसगढ़ की वेबसाइट gpypcg.org.in तथा गायत्री परिवार विवाह संगम पोर्टल gpvivahsangam.com का भी उद्घाटन हुआ।

सृजन सेनानी सम्मान समारोह में भाग लेते छत्तीसगढ़ के नवयुवक

छत्तीसगढ़ में हुए जिला स्तरीय दस पाठक सम्मेलन

कोरबा। छत्तीसगढ़

कोरबा में प्रस्तावित 'अश्वमेध रजत जयन्ती समारोह' की पूर्व तैयारी के रूप में 27 जनवरी से 5 फरवरी की अवधि में प्रान्त के 10 जिला मुख्यालयों-कोरबा, चाँपा, रायगढ़, जशपुर, वैकुण्ठपुर, राजपुर, सुरजपुर, अम्बिकापुर, मुंगेली एवं बिलासपुर में एक-एक दिन के 'अखण्ड ज्योति' एवं 'युग निर्माण योजना' पत्रिकाओं के पाठक सम्मेलन आयोजित हुए। इन आयोजनों में पूज्य गुरुदेव के विचार-शरीर 'अखण्ड ज्योति' एवं 'युग निर्माण योजना' को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य पर विशेष चर्चा की गई।

केन्द्रीय प्रतिनिधि डॉ. अशोक ढोके ने कहा कि यही वह साहित्य है जो सही अर्थों में धर्म, अध्यात्म की समुचित परिभाषा प्रस्तुत करता और मनुष्यों को सही रास्ता दिखाता है। डॉ. ढोके ने मिशन की पत्रिकाओं व अन्य साहित्य को भी अधिकाधिक प्रसारित करने हेतु परिजनों को प्रोत्साहित किया।

जशपुर में आयोजित सम्मेलन को सम्बोधित करते केन्द्रीय प्रतिनिधि

इन मुख्यालयों के सम्मेलनों में स्थानीय परिजनों, अखण्ड ज्योति व युग साहित्य के पाठकों सहित शिक्षा, व्यापार, धर्म आदि क्षेत्रों से जुड़े हजारों लोगों ने भाग लिया।

उल्लेखनीय है कि व. माताजी के संरक्षण-मार्गदर्शन में 6 से 10 फरवरी 1994 में कोरबा का ऐतिहासिक अश्वमेध सम्पन्न हुआ था, जिसकी रजत जयन्ती की तैयारी चल रही है।

प्रबुद्धों के उद्गार

उपर्युक्त सभी सम्मेलनों में प्रतिभागी विचारशीलों ने अखण्ड ज्योति व गुरुदेव के साहित्य को जीवन में प्रकाश लाने वाला, अभिनव समाज का निर्माण करने वाला और राष्ट्रीयता की प्रेम भावना को जगाने वाला अद्वितीय साहित्य बताया।

उपलब्धि : इन सभी सम्मेलनों के दुग्ध-मन्थन से 13000 नये पाठक प्रज्ञापुत्रों के नवनीत निकले, जो कि इन सम्मेलनों की शानदार उपलब्धि है।

महाशिवरात्रि पर देशभक्ति का दर्शनीय जोश

कन्धमाल, फुलबाणी। ओड़िशा

कन्धमाल के परिजनों ने महाशिवरात्रि पर्व को 'शिव-आराधना शहीद-श्रद्धांजलि समारोह' के रूप में 9 कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ मनाया। इसमें शिव-अभिषेक के साथ 1000 कार्यकर्त्ताओं ने जिस जोश और राष्ट्रभक्ति की उमंग से पुलवामा में शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की, उससे प्रशासन भी भावविभोर हो उठा। 44 शहीदों की प्रतीक 44 मशाल और 100008 दीप प्रज्वलित किए, सामूहिक प्रार्थना हुई और प्रत्येक व्यक्ति ने शहीदों के प्रतीक पर पुष्पांजलि अर्पित की। मुख्य अतिथि जिले के एसपी महोदय ने कहा कि पूरे फुलबाणी जिले में ऐसा भावविभोर कर देने वाला श्रद्धांजलि समारोह कहीं नहीं हुआ।

> 44 शहीदों की प्रतीक 44 मशाल एवं 1,00,008 दीप प्रज्वलित कर दी श्रद्धांजलि

यह कार्यक्रम शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री सुमेश्वर ताण्डी के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन, प्राणवान कार्यकर्ता, भारतीय नौसेना के सेवानिवृत्त सिपाही श्री रविन्द्र गौड़ के प्रोत्साहन, श्री सुधांशु सेनापति के संयोजन और ओड़िशा जोन शान्तिकुञ्ज के मार्गदर्शन में आयोजित हुआ। इसमें प्रान्तीय जोन के श्री बालकृष्ण पण्डा, उपजोन के डॉ. वृन्दावन मिश्रा, जिला परिवारके श्री अनन्त चरण पृष्टि, श्री आर. सी. सेनापति सहित क्षेत्र के कई वरिष्ठ परिजन उपस्थित रहे।

शहीद स्मारक, श्रद्धांजलि देते पुलिस अधीक्षक व श्रद्धांजलि स्वरूप प्रज्वलित 44 मशालें

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण प्रशिक्षण केन्द्र में गर्भोत्सव संस्कार कार्यशाला

देहरादून। उत्तराखण्ड

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण प्रशिक्षण केन्द्र, चन्दर नगर, देहरादून में 28 फरवरी को 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' पर कार्यशाला आयोजित हुई। इसमें ए.एन.एम. अधिकारियों एवं विभागीय डाक्टरों सहित जनपद देहरादून की 250 से अधिक महिला कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यशाला का नेतृत्व शांतिकुंज के 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' विभाग प्रमुख डॉ. गायत्री शर्मा एवं डॉ. ओ.पी. शर्मा जी ने किया। डॉ. गायत्री शर्मा ने इसमें 'गर्भोत्सव संस्कार' की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा, यही वह प्रभावशाली विधान है जिसके माध्यम से संस्कारवान पीढ़ी का निर्माण सम्भव है। इस सन्दर्भ में उन्होंने गर्भस्थ शिशुओं की विकास प्रक्रिया के वैज्ञानिक पहलुओं एवं पौराणिक आख्यानों का तुलनात्मक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया।

शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. ओ.पी. शर्मा का स्वागत एवं कार्यशाला को संबोधित करतीं अभियान संयोजक शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. गायत्री शर्मा

डॉ. ओम् प्रकाश शर्मा जी ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा वर्ष 1998-99 में परिभाषित 'स्वास्थ्य' का उदाहरण देते हुए शारीरिक, मानसिक और नैतिक मूल्यों का समन्वित विकास ही समग्र स्वास्थ्य बताया तथा इसके लिए सहयोगी आध्यात्मिक दिनचर्या पर जोर देते हुए कहा कि गर्भोत्सव संस्कार में इस सबका समावेश है, इसका प्रशिक्षण सभी स्वास्थ्यकर्मियों को देना चाहिए ताकि वे गर्भिणियों का समुचित देख-भाल एवं मार्गदर्शन कर सकें।

श्रीमती अंजली नौटियाल, निदेशक, एन.एच.एम. राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उत्तराखण्ड तथा श्रीमती सरोज नैथानी, अपर निदेशक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन उत्तराखंड ने शांतिकुञ्ज के इस अभियान को बहुत सराहा तथा सभी महिला स्वास्थ्यकर्मियों को इससे प्रशिक्षित कराने की बात कही।

इन्दौर। मध्य प्रदेश

शांतिकुंज द्वारा घोषित गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना कार्यक्रम के अन्तर्गत गायत्री परिवार इन्दौर द्वारा 24 फरवरी को नगर में 41 घरों में एक ही समय गायत्री यज्ञ आयोजित किये गये। इसे सम्पन्न कराने में ओम प्रकाश अग्रवाल, जेपी यादव सहित महिला मण्डल, युवा मण्डल के सभी गायत्री परिजनों ने सहयोग किया। यज्ञ के दौरान सभी याजकों को वृक्षारोपण, नशा त्याग एवं नियमित अंशदान के संकल्प कराए गए।

घर-घर यज्ञ अभियान

अपने दोषों से अनभिज्ञ रहने से बड़ा प्रमाद इस संसार में और कोई नहीं है।

युवा अभ्युदय 2019 देश के भावी कर्णधारों को दिशा देने का एक प्रभावशाली मंच

बड़े उद्देश्यों के लिए जिएँ

• श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी, कुलाधिपति देसंविवि

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने देश के युवा कर्णधारों को भय, भ्रांतियों से उबारकर जीवन की यथार्थता का बोध कराने के लिए 'दिया' से जुड़कर कार्य कर रहे सैकड़ों युवाओं का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि मानव जीवन बड़े उद्देश्य के लिए मिला है, परीक्षा तो इसका एक छोटा-सा पड़ाव है। यदि सोच सही हो तो परीक्षा में सफलता-असफलता से हौसले पस्त नहीं होते, संभावनाएँ सतत बनी रहती हैं।

व्यक्तित्व विकास के लिए नियमित ध्यान करें

• डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देसंविवि

डॉ. चिन्मय जी ने व्यक्तित्व विकास में ध्यान की महत्ता पर विशेष रूप से चर्चा की। उन्होंने कहा कि अपने आपको पूर्णता के साथ जानने का विज्ञान ही ध्यान है। हम वहीं जानते हैं, जो बाहर वाले हमारे बारे में बताते हैं। प्रतिदिन 10 से 15 मिनट का समय खुद के लिए निकालिए, आत्मसमीक्षा कीजिए, उसके बाद अपनी क्षमतानुसार लक्ष्य निर्धारित कीजिए। उन्होंने अपनी संभावनाओं को पहचानकर कंस से कृष्ण, रावण से राम, बुद्धू से बुद्ध, नर से नरायण बनने की प्रेरणाएँ दीं।

दूसरों की नहीं, खुद की सुनो

• सुश्री इरा सिंघल, आईएएस

2014 में सिविल सेवा परीक्षा टॉपर रहीं सुश्री इरा सिंघल ने सफलता के बहुमूल्य सूत्र दिये। उन्होंने कहा कि किसी को देखकर या किसी के कहने पर कोई काम करोगे, तो सफलता आधी-अधूरी ही हाथ लगेगी। मेरी दिव्यांगता मेरे लक्ष्य में कभी भी आड़े नहीं आई क्योंकि मुझे लोगों की तरह सिर्फ परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होना था, बल्कि मुझे इस देश के लिए काम करना था। शायद इसीलिए मैं अपना सौ फीसदी दे पा रही हूं।

नई दिल्ली : देव संस्कृति विवि. के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ प्रणव पण्ड्या जी एवं प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 10 मार्च-रविवार को दिल्ली के दौलत राम कॉलेज में आयोजित 'युवा अभ्युदय-2019'को संबोधित किया। इस सम्मेलन का आयोजन संघ लोकसेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं का पिछले कई वर्षों से मार्गदर्शन कर रहे गायत्री परिवार के युवा संगठन 'दिया' ने किया था। सम्मेलन में सिविल सेवा परीक्षाओं की तैयारी कर रहे लगभग 2000 युवाओं ने भाग लिया।

अधिकांश का दिया की गतिविधियों से प्रथम बार परिचय हो रहा था। वस्तुतः कार्यक्रम का उद्देश्य ही नये युवाओं को दिया के सत्प्रयासों का परिचय कराने के लिए किया गया था।

श्रद्धेय डॉ. साहब ने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं को सफलता के अनेक सूत्र दिये। उन्होंने दूरदर्शिता, समग्र सोच, कल्पना शक्ति, स्वयं की क्षमता पर विश्वास, धैर्य और एकाग्रता हासिल करने के सूत्रों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए युवाओं को खुद की नेतृत्व क्षमताओं को विकसित करना होगा। अपनी मनःस्थिति को मजबूत बना लो, तो कठिन से कठिन परिस्थितियों को मात आसानी से दे सकोगे।

युवा अभ्युदय की पूर्व तैयारियों एवं कार्यक्रम के आयोजन, संचालन में युवा प्रकोष्ठ प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री के.पी. दुबे, आशीष सिंह, एनसीआर जोन प्रभारी श्री जमना प्रसाद साहू, गायत्री चेतना केन्द्र नोएडा के व्यवस्थापक श्री आरएन सिंह आदि का अमूल्य सहयोग एवं मार्गदर्शन रहा।

युवा अभ्युदय-2019 में भाग ले रहे विद्यार्थी

200 युवाओं का क्रांतिकारी संगठन

दिया, दिल्ली के शाखा संस्थापक मनीष कुमार के अलावा बसंत चौधरी, ओंकार शर्मा, चंचल यादव, विनय पाण्डेय, विनय चौरसिया, अंशुमान भारद्वाज, पियूष गुप्ता, श्रवण कुमार, संतोष कुमार, नरेन्द्र सिनसिनवार, शुभम वर्मा, ललन सिंह लगभग 200 युवा इस अभियान से जुड़े हैं। वे दिया द्वारा की जा रही कई प्रकार की समाज सेवा में भी सक्रिय योगदान देते हैं।

बदल रही है मानसिकता : प्रशासनिक परीक्षाओं की कोचिंग कक्षा 'पतंजलि आईएएस' का दिया की गतिविधियों में विशेष सहयोग है। संस्था संचालक श्री धर्मेन्द्र कुमार का कहना है कि प्रतियोगी परीक्षा के विद्यार्थियों का तनाव में रहना स्वाभाविक है, जिससे विद्यार्थी आत्महत्या तक के लिए उतारू हो जाते हैं। लेकिन दिया, दिल्ली की सक्रियता से विद्यार्थियों की मानसिकता में बहुत बड़ा बदलाव आया है, आत्महत्या की घटनाएँ घटी हैं।

दिया, दिल्ली की नियमित सेवाएँ

- प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी कर रहे युवाओं के मार्गदर्शन के लिए मुखर्जी नगर में हर रविवार को मोटिवेशनल प्रोग्राम्स'का आयोजन।
- गरीबों की बस्ती में 4 बाल संस्कार शालाओं का संचालन। इनके विद्यार्थियों ने युवा अभ्युदय-2019 में भी राष्ट्रभक्ति वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये थे।
- मुखर्जी नगर में युग साहित्य स्टॉल का नियमित संचालन
- विभिन्न होस्टल में जाकर युवाओं से व्यक्तिगत संपर्क करना, उन्हें सत्साहित पढ़ने के लिए प्रेरित करना और मोटिवेशनल कार्यक्रमों की जानकारी देना।

युवा अभ्युदय-2019 में बाल संस्कार शाला के बच्चों की प्रस्तुति

अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में

बड़े लक्ष्य की ओर बढ़ते चरण

लक्ष्य है
24 बाल संस्कारशाला
अ.ज्यो. के 2400 सदस्य

पोर्ट ब्लेअर

3 फरवरी को गायत्री परिवार अंडमान निकोबार ने पोर्टब्लेअर से 200 कि.मी. दूर एक नये द्वीप रगत में 9 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया। यह कार्यक्रम गतवर्ष पोर्टब्लेअर में आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के वार्षिकोत्सव के रूप में किया गया था। उल्लेखनीय है कि गतवर्ष के महायज्ञ में स्थानीय शाखा ने युग चेतना के व्यापक विस्तार का संकल्प लेते हुए पूरे महाद्वीप में 24 बाल संस्कार शालाएँ चलाने और अखण्ड ज्योति के 2400 सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा था। इस अभियान में शाखा को तेजी से सफलता मिल रही है।

पोर्टब्लेअर से 200 कि.मी. दूर एक नये द्वीप रगत में हुआ 9 कुण्डीय यज्ञ

रगत द्वीप में आयोजित 9 कुण्डीय यज्ञ का संचालन-संयोजन गायत्री चेतना केन्द्र के परिव्राजक श्री रामसिंह यादव, लक्ष्मीनारायण, वासु, गोपाल, पार्वती, मीना, स्वप्ना एवं राजाराम की टोली ने किया। रगत टापू की बहिन लक्ष्मी, राखी एवं रीना मुख्य रूप से सक्रिय रहीं। श्री रामसिंह जी ने मिशन की गतिविधियों से परिचय एवं प्रेरणा बनाये रखने के लिए सभी को प्रज्ञा अभियान का सदस्य बनने के लिए प्रेरित किया।

मॉस्को में एम्बेसी स्कूल ऑफ इण्डिया के विद्यार्थियों को गायत्री यज्ञ के साथ विदाई दी

रूस की राजधानी मॉस्को के इस्कॉन मंदिर में 7 मार्च को एक धार्मिक अनुष्ठान के अंतर्गत गायत्री चेतना केन्द्र मास्को की ओर से गायत्री यज्ञ आयोजित किया गया। केन्द्र के संचालक श्री जगवीर कादयान के अनुसार इसमें मन्दिर के सदस्यों सहित एम्बेसी स्कूल ऑफ इण्डिया के सभी बच्चों, अध्यापकों और अभिभावकों ने भाग लिया। विद्यालय का सत्रांत होने के कारण विशेष यज्ञाहुतियों के साथ उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई।

श्री सुशील कुमार, श्रीमती हेमलता, श्री कुमार विनायक, स्कूल की डॉक्टर श्रीमती विनिता सिन्हा, महिला मंडल प्रभारी श्रीमती अनीता कादयान, श्री एन. डी. कोटवानी सहित भारतीय व रूसी समाज के कई गणमान्यों ने बच्चों को आशीष दिया। सभी ने कश्मीर में शहीद हुए जवानों को श्रद्धांजलि भी अर्पित की।

असम और अरुणाचल में इण्टर्नशिप

देश के जवानों को लाभान्वित किया, मस्जिद में भी हुआ योग शिविर

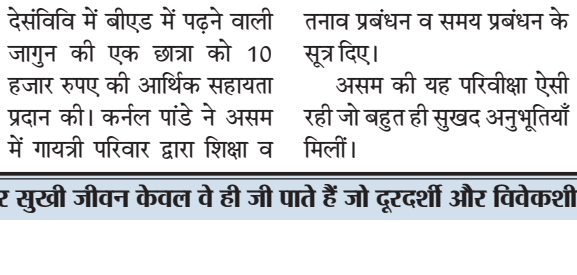

लेखापानी, असम में जवानों को योग कराते देसंविवि के विद्यार्थी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की राजू राम, निखिल चौधरी व प्रखर पांडे की टोली असम व अरुणाचल प्रदेश की प्रव्रज्या पर थी। टीम ने अपनी बहुमुखी सक्रियता के अंतर्गत कई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम किये और वहाँ की अविस्मरणीय अनुभूतियाँ लेकर लौटे।

- असम के लेखापानी में राजपूताना रायफल्स की नवीं बटालियन के जवानों व अधिकारियों की 11 दिनों तक योग, ध्यान, प्राणायाम की कक्षा ली। इससे प्रभावित होकर बटालियन के कर्नल मुकेश पांडे ने स्थानीय विद्यार्थियों को दे.सं.वि.वि. में पढ़ाने के लिए फीस व अन्य आवश्यक खर्च वहन करने का आश्वासन दिया। उन्होंने देसंविवि में बीएड में पढ़ने वाली जागुन की एक छात्रा को 10 हजार रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान की। कर्नल पांडे ने असम में गायत्री परिवार द्वारा शिक्षा व स्वास्थ्य आंदोलन को गति देने के लिए 5 लाख की वित्तीय सहायता का प्रस्ताव भी दिया।
- जागुन क्षेत्र की जामा मस्जिद में 9 दिवसीय योग शिविर आयोजित हुआ। इसके समापन पर सामूहिक प्रार्थना का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें प्रतिभागी मुस्लिम बंधुओं ने सत्प्रवृत्ति सवंर्धन व दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन की प्रार्थना की।
- अरुणाचल प्रदेश के जयरामपुर में स्थित असम रायफल्स की 13 वीं बटालियन में चार दिवसीय योग, एक्युप्रेशर व मर्म चिकित्सा का शिविर लगाया गया। जवानों, अधिकारियों व उनके परिवारों के साथ असम रायफल्स स्कूल के विद्यार्थियों ने इसका लाभ लिया।
- किड्जी स्कूल व केन्द्रीय विद्यालय लेखापानी के स्टाफ को तनाव प्रबंधन व समय प्रबंधन के सूत्र दिए।

असम की यह परिवीक्षा ऐसी रही जो बहुत ही सुखद अनुभूतियाँ मिलीं।

महाशिवरात्रि पर्व पर रुद्राभिषेक

श्रेष्ठता का वरण और शुभ आचरण ही शिव की सच्ची आराधना है

शिवरात्रि का पावन पर्व। देव संस्कृति विवि. स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव देवालय में शंख-डमरू की दिव्य ध्वनियों के बीच अंतर्मन को आह्लादित करते ओजस्वी रुद्राष्टक, महाकालाष्टकम, पुरुष सूक्त से गूँज रहे थे। माथे पर त्रिपुण्ड लगाये विश्वविद्यालय के सैकड़ों छात्र-छात्राओं, शिविरार्थी-साधक, शांतिकुंज के अंतेवासियों का उल्लास इस अवसर पर देखते ही बनता था।

प्रज्ञेश्वर महादेव का अभिषेक कुलपति श्री शरद पारधी जी व प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने सपत्नीक किया। डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि हमारी पर्व परम्परा जीवन आदर्शों की याद दिलाने, उनके आधार पर आत्मसमीक्षा करने और श्रेष्ठता का वरण करने की प्रेरणा है। वास्तविक शिवाभिषेक तो जीवन में श्रेष्ठताओं को धारण करना है, लेकिन कुछ लोग शिव की साधना के नाम पर ही अशिव आचरण करने लगते हैं, वह अशोभनीय है।

श्री शरद पारधी ने भगवान शिव की भक्ति से जुड़ी भ्रांतियों की ओर ध्यानाकर्षित किया। उन्होंने शिव की तरह शांत, सादगीपूर्ण जीवन और सबके हित की कामना के साथ साधकोचित जीवन जीने की प्रेरणाएँ दीं।

प्रज्ञेश्वर महादेव में रुद्राभिषेक के विशिष्ट अवसर पर रसिया, अमेरिका, यूके, ऑस्ट्रेलिया से आये अतिथि भी उपस्थित थे। यह रुद्राभिषेक शांतिकुंज के व्यवस्थापक श्री शिवप्रसाद मिश्रा की टोली ने किया। संगीत विभाग के संग ने उसमें सरसता का संचार किया।

उधर शांतिकुंज के मुख्य सभागार में महिला मण्डल के नेतृत्व में भव्य दीपयज्ञ सम्पन्न हुआ। इसमें सैकड़ों लोगों ने अपने अंदर की एक बुराई छोड़ने एवं शिवत्व की ओर बढ़ने केलिए एक अच्छाई ग्रहण करने का संकल्प लिया।

प्रज्ञेश्वर महादेव देवालय में चल रहा रुद्राभिषेक

सफल और सुखी जीवन केवल वे ही जी पाते हैं जो दूरदर्शी और विवेकशील होते हैं।

मालवा क्षेत्र में हुआ श्रीराम आरण्यक का लोकार्पण

भारत की ऋषि और कृषि संस्कृति को पुनर्जीवित करने का एक सशक्त अभियान है 'श्रीराम आरण्यक' • श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी

आमला, आगर। मध्य प्रदेश

मिशन के सूत्र-सिद्धांतों और विविध आन्दोलनों के व्यापक विस्तार के लिए शक्तिपीठों, गायत्री चेतना केन्द्रों की शृंखला के अगले क्रम में अब श्रीराम आरण्यकों की स्थापना का अभियान गतिशील हो रहा है। ऐसे ही एक आरण्यक की स्थापना श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा मालवा क्षेत्र के प्रज्ञाकुंज, आमला में हुई। इसके अंतगर्त कुल 23 बीघा जमीन में वेदमाता प्रज्ञापीठ, 24 कुण्डीय स्थाई यज्ञशाला एवं 7 पक्की साधना कुटियों का निर्माण किया गया है। इसके साथ ही वहाँ श्रीराम गुरुकुलम के निर्माण के लिए भूमिपूजन भी किया गया है।

श्रीराम आरण्यक का लोकार्पण 10 से 12 मार्च की तारीखों में आयोजित 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। श्रद्धेय डॉ. साहब के अलावा कार्यक्रम संचालन के लिए शांतिकुंज से सर्वश्री के.पी. दुबे, डॉ. डी.पी. सिंह, योगेन्द्र गिरि, ओंकार पाटीदार, नारायण रघुवंशी, बसंत यादव, उदयकिशोर मिश्रा, संतोष सिंह, प्रेमलाल साहू, कमलेश प्रसाद की विशाल टीम आमला पहुँची थी।

इस कार्यक्रम के निमित्त 108 गाँवों में जनजागरण अभियान चलाया गया था। परिणाम स्वरूप 10 मार्च को इस वीरान क्षेत्र में भी विशाल कलश यात्रा निकली।

11 मार्च को श्रद्धेय डॉ. साहब का आगमन हुआ। उन्होंने दोपहर के समय 2,500 लोगों की एक विशाल सभा को संबोधित किया। इस सभा में जनप्रतिनिधि, पंच-सरपंच, अधिकारी, किसान सभी उपस्थित थे।

श्रद्धेय ने इस सम्मेलन में 'फिर अपने गाँवों को स्वर्ग बनायेंगे' विषय से युग संदेश देते हुए भारत की सनातन ऋषि एवं

कृषि संस्कृति को ही सामाजिक सुख-समृद्धि का आधार बताया। उन्होंने कहा कि हमें पाश्चात्य के मनोवैज्ञानिक प्रभावों से मुक्त होकर साधनों की होड़ से बचना होगा तथा श्रमशील-स्वावलम्बी जीवन जीना होगा।

श्रद्धेय डॉ. साहब ने पारिवारिक पंचशीलों पर प्रकाश डाला। घर-परिवार में बच्चों में उत्तम संस्कार कैसे विकसित किये जायें, इसकी चर्चा की। उन्होंने परस्पर एक-दूसरे को स्नेह-सम्मान देते हुए आत्मीयता विस्तार के लिए प्रेरित किया।

सामाजिक परम्पराओं के परिष्कार की चर्चाएँ भी हुई। मृतक भोज, खर्चीले विवाह आदि के उल्लेख के साथ उन्होंने छेड़ा (पर्दाप्रथा) को समाप्त करने पर विशेष जोर दिया और सभा में उपस्थित पर्दा करने वाली बहिनों के आग्रहपूर्वक पर्दे हटवाये भी।

12 मार्च को प्रज्ञापीठ की प्राण प्रतिष्ठा, आरण्यक का लोकार्पण, ध्वजारोहण, सप्तऋषियों के नाम पर बनीं सात कुटियों के लोकार्पण, त्रिवेणी रोपण और श्रीराम गुरुकुल निर्माण के लिए भूमिपूजन की प्रक्रिया श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुई। इस अवसर पर उन्होंने नवनिर्मित कुटियों में 40 दिवसीय साधना अनुष्ठान कर चुके साधकों का मंगल तिलक भी किया। आरण्यक के निर्माण में विशिष्ट योगदान देने वाले महानुभावों को भी सम्मानित किया।

इस कार्यक्रम में जिला राजगढ़ के ग्राम झीरी, जहाँ के सभी लोग संस्कृत भाषा में ही संवाद करते हैं, ने 'वदतु संस्कृतम्, जयति भारतम्' नामक अत्यंत आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसमें समाज में व्याप्त भाषा, प्रांत, सम्प्रदाय के नाम पर चल रही कटुता को किसान, विद्यार्थी, गृहणी, शिक्षक, गायत्री परिवार आदि द्वारा अपने दृढ़ निश्चय और कड़ी मेहनत से निरस्त करने का संदेश दिया गया था।

आरण्यक में प्रतिष्ठित वेदमाता गायत्री प्रज्ञापीठ और साधना कुटियाँ

आरण्यक की दिव्यता और जन-जन की भागीदारी

श्रीराम आरण्यक, प्रज्ञाकुंज, आमला नगर से 3 कि.मी. दूर पर्वत-पहाड़ियों से घिरा क्षेत्र है जहाँ किसी प्रकार की बसावट नहीं है। प्राचीन आरण्यकों की तरह यह क्षेत्र साधना और प्रशिक्षण के लिए अत्यंत रमणीय एवं दिव्य है। वहाँ गायत्री प्रज्ञापीठ, साधना कुटी, यज्ञशाला के अलावा एक आवासीय श्रीराम गुरुकुल का निर्माण भी कराया जा रहा है, जिसका भूमिपूजन श्रद्धेय डॉ. साहब ने किया।

इस क्षेत्र का विकास जन-जन की भागीदारी के सिद्धांत से किया जा रहा है। श्री कालूराम पाटीदार ने 11 बीघा भूमि दी। अन्य ट्रस्टीगण श्री मणिशंकर जी, श्री महेश विश्वकर्मा एवं अन्यों के सहयोग से 12 बीघा जमीन खरीदी गई। कुल 23 बीघा जमीन पर बने श्रीराम आरण्यक के संचालन के लिए 2100 रुपये मासिक अंशदान देने वाले 750 सदस्य तैयार किये गये हैं। लोकार्पण कार्यक्रम में श्रीराम गुरुकुलम के निर्माण के लिए 1,11,111 रुपये की घोषणा हुई।

मंचासीन श्रद्धेय डॉ. साहब एवं शांतिकुंज की टोली

डीआरडीओ के वैज्ञानिकों की कार्यशाला में डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का संदेश

'सादा जीवन-उच्च विचार' के सिद्धांत में निहित है मानवीय उत्कृष्टता एवं जीवन की सुख-शांति

वैज्ञानिकों की कार्यशाला को संबोधित करने के लिए उपस्थित डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

मसूरी, देहरादून। उत्तराखंड

रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) के मसूरी में स्थित एक महत्वपूर्ण अनुभाग प्रशिक्षण प्रबंधन संस्थान (ITM) द्वारा आयोजित 3 दिवसीय कार्यशाला आयोजित हुई। इसमें 8 मार्च को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का 'मानवीय उत्कर्ष' विषय पर व्याख्यान हुआ।

डॉ. चिन्मय जी ने वर्तमान जीवन में बढ़ते तनाव और गिरते नैतिक मूल्यों का कारण मनुष्य की भौतिकवादी सोच को बताया। उन्होंने कहा कि आज व्यक्ति सुख पाने के लिए भौतिक संसाधन जुटा रहा है, लेकिन यह भूल रहा है कि इसके लिए वह प्रकृति को कितना भारी नुकसान पहुँचा रहा है। इससे पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है। दूषित पर्यावरण एवं असीम आकांक्षाओं के कारण उस पर नकारात्मकता हावी होती जा रही है। एक प्रकार से कहा जाय तो व्यक्ति अपनी ही सुख-शांति पर स्वयं कुल्हाड़ी मार रहा है।

डॉ. चिन्मय जी ने सभा को मानवीय उत्कर्ष के लिए संयमी, संतुलित जीवन शैली अपनाने और परम पूज्य गुरुदेव के 'सादा जीवन-उच्च विचार' के सिद्धांत को समाज में स्थापित करने की आवश्यकता बताई। इस अवसर पर देश भर से आये 30 से अधिक वैज्ञानिक व तकनीकी अधिकारी उपस्थित थे।

भारत माता आराधना महायज्ञ

श्रद्धेय डॉ. साहब सहित गणमान्य संतों ने किया ध्वजारोहण

देवभूमि हरिद्वार में 9 से 13 मार्च की तारीखों में भारत माता मंदिर के संस्थापक स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि जी की अध्यक्षता में 501 कुण्डीय भारत माता आराधना महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इसका शुभारंभ धर्मध्वज एवं राष्ट्रध्वज के आरोहण के साथ हुआ। अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख प्रतिनिधि श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, जूना अखाड़ा के अध्यक्ष स्वामी अवधेशानंद गिरि व कथा मर्मज्ञ स्वामी गोविन्द गिरि ध्वजारोहण के लिए विशेष रूप से आमंत्रित थे।

स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि महाराज ने इस अवसर पर कहा कि पूरे विश्व में इन दिनों वेदमाता, विश्वमाता की उपासना में करोड़ों साधक अपनी आहुतियाँ दे रहे है। गायत्री वेदमाता है, देवमाता है, विश्वमाता है। अतः भारत को जगद्गुरु

भारत को जगद्गुरु बनाना है तो गायत्री की साधना करनी होगी।
- स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि जी

बनाना है तो गायत्री की साधना करनी होगी।

गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना के साथ एकाकार हो गये छत्तीसगढ़ के भीष्म पितामह आदरणीय पंडित ज्वाला प्रसाद शर्मा

महासमुंद। छत्तीसगढ़

माँ गायत्री के सिद्ध साधक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, आद. पं. ज्वाला प्रसाद शर्मा (महाराज जी) 96 वर्ष की उम्र में दिनांक 8 मार्च 19 को पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गये। वे परम पूज्य गुरुदेव के अत्यंत आत्मीय शिष्यों में से थे। परम पूज्य गुरुदेव उनके यहाँ पाँच बार गये। देशभर में ऐसे व्यक्ति बिरले ही होंगे, जिनके यहाँ प.पू.गुरुदेव इतने अधिक बार गये हों।

स्व. पं. ज्वाला प्रसाद जी ने अविभाविज मध्य प्रदेश के महासमुंद में दो बार 1008 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आयोजित किये। प्रथम बार सन् 1971 में स्वयं परम पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति में 1008 कुण्डीय यज्ञ हुआ तथा दूसरी बार 1974 में शांतिकुंज से पहुँची आदरणीय श्री केसरी कपिल जी की टोली ने विराट यज्ञ का संचालन किया।

महान स्वतंत्रता सेनानी पं. ज्वाला प्रसाद जी का अंतिम संस्कार पूरे राजकीय सम्मान के साथ हुआ, जिसमें जिला कलेक्टर सहित वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं गणमान्य उपस्थित थे।

वे छत्तीसगढ़ के भीष्म पितामह माने जाते हैं। पूरे छत्तीसगढ़ में मिशन के विस्तार में उनकी असाधारण भूमिका रही है। उन्होंने 24 शक्तिपीठों के निर्माण का संकल्प लिया था और सभी 24 शक्तिपीठों की प्राण प्रतिष्ठा कराई। उनका दिल हर पल मिशन के लिए ही धड़कता रहा।

स्व. पं. ज्वाला प्रसाद जी सात वर्षों तक शांतिकुंज में कार्यकर्त्ता के रूप में भी रहे। उनकी प्रेरणा से वर्ष 1990 में

स्व. पं. ज्वाला प्रसाद शर्मा

हरिद्वार में आयोजित परम पूज्य गुरुदेव के विराट श्रद्धांजलि समारोह में लगने वाला सारा का सारा चावल छत्तीसगढ़ क्षेत्र ने ही भिजवाया था।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुंज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा अंबिका प्रिंटर्स एण्ड बाइंडर्स, 656क देहराखास, पटेल नगर, इंडस्ट्रिअल एरिया, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय, सह सम्पादक-प्रमोद शर्मा, सहायक सम्पादक-धीरेन्द्र सिंघारपुरिया
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866
संपर्क सूत्र :- फोन-9258369725 (प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक) email : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार संपादन : news@awgp.in **एवं** news.shantikunj@gmail.com

Publication date: 27.03.2019
Place: , Haridwar.
RNI-NO.38653/ 80
Postel R.No.
UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20
Licenced to Post Without Prepayment vide
WPP No. 04/2018-20